# मेनुअल ऑन ओपन लायब्रेरी

लेखिका : उषा मुकुन्दा
अनुवाद : जया राठौड़ एवं कामिनी उपाध्याय

## खुला पुस्तकालय

सेन्टर फॉर लर्निंग में हमारे यहाँ जो पुस्तकालय है वो अवधारणात्मक और वास्तविक दोनों ही मायनों में एक खुला पुस्तकालय है। इसका मतलब यह है कि वहाँ पर सारी सामग्री और संसाधनों तक दिन और रात, पूरे साल भर स्वतंत्र और खुली पहुँच है। आपसी विश्वास और साझा जिम्मेदारी ही इस पुस्तकालय के काम का आधार है। पुस्तकालय अर्न्तक्रियाओं के सारे नियम–कानून सहयोग, विचार और पूरे समुदाय को ध्यान रखते हुए तय किए जाते हैं।

पुस्तकालय की पुलिसगिरी या निगरानी करने का काम पुस्तकालय प्रभारी के लिए चुनौती नहीं है बल्कि उसकी चुनौती यह है कि वह पुस्तकालय और इसके उपयोगकर्ताओं को जीवंत रूप से पहचान पाए और अपनी पकड़ बना पाए। यह केवल तभी हो सकता है जब पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं का समुदाय स्वयं में स्वामित्व और जवाबदेही की भावना महसूस करें। उदाहरण के तौर पर एक दोपहर को जब अचानक मुसलाधार बारिश शुरू हो गई तो कुछ छात्रों ने फुरती से पुस्तकालय में जाकर खिड़कियाँ बंद की और किताबों को बारिश से बचाया। वरिष्ठ छात्रों में से प्रत्येक छात्र रोटेशन के आधार पर रात को इस जगह पर ताला लगाता है। यदि कोई छात्र बीमार होता है या बाहर होता है तो उसकी जिम्मेदारी दूसरा छात्र लेता है। इनमें से ज़्यादातर काम पुस्तकालय प्रभारी की जानकारी और हस्तक्षेप के बिना होता है।

पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों का संग्रह गुणवत्ता और उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पारम्परिक और समकालीन दोनों ही प्रकार की चीज़ें अलमारियों में देखी जा सकती है। स्टाफ और छात्र दोनों ही किताबें चुनने की प्रक्रिया सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। असल में छात्रों को नियमित रूप से किताबों की दुकानों और प्रर्दशनियों में ले जाया जाता है ताकि वे पुस्तकालय के लिए किताबें चुनकर खरीद पाएं। एक नवीनतम ईन–हाऊस कम्प्यूटर कार्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि सभी उपयोगकर्ता आसानी से किताब ले पाएं, लौटा पाएं, ढूँढ़ पाए, अलग रख पाए और अन्य पुस्तकालय क्रियाओं को कर पाएं।

मुख्य पुस्तकालय एक सुंदर भवन में चलता है जिसे स्टॉफ, छात्रों और बेशक वास्तुकार के विचारों से डिजाईन किया गया था। इसका माहौल और सौंदर्य सभी आने वालों और उपयोग करने वालों को आकर्षित करता है और उनका स्वागत करता है। हर छात्र समूह का सप्ताह में एक पुस्तकालय कालांश होता है जो कि किताबें ढूँढ़ने, लेने, लौटाने और साथ ही पढ़ने को और पुस्तकालय के बारे में जानकारी देने वाली विभिन्न गतिविधियों के लिए काम में लिया जाता है। हर तरीके से पुस्तकालय की मदद करना इस जगह की सहज संस्कृति है। जिन किताबों की मरम्मर की जरूरत होती है उन्हें बहुत ही कल्पनाशीलता और प्यार से बच्चे वापस तैयार करते हैं।

बच्चे, ग्रन्थ सूचीयाँ, अनुक्रमणिकाएँ, अलमारियों के लिए लेबल, पोस्टर और बुकमार्क, पुस्तकालय पर आधारित छोटी सी विडियों फिल्म, नए आने वाले लोगों के लिए संक्षिप्त कम्प्यूटर गाईड आदि बनाकर भी पुस्तकालय के उपयोग को सुगम बनाने का प्रयास करते हैं।

CFL का खुला पुस्तकालय एक खुशनुमा और रोचक स्थान है।

## खुले पुस्तकालय का अर्थ

### स्कूल पुस्तकालय के हर एक पहलु में यह कैसे जीवंत होता है?

चलिये देखते है! याद रखिये कि अगर आप भागने वाले लोगों में से है तो पुस्तकालय में खुलापन नहीं लाया जा सकता। एक खुले पुस्तकालय की आत्मा और परिपूर्णता के लिए अंतराल और मौज–मस्ती ज़रूरी है।

1. **स्थान –** यदि आप पहले से ही किसी स्थापित ढ़ाँचे में है तो आगे के संदर्भ के लिए पढ़िए।

   **पुस्तकाल**य किसी ऐसे स्थान पर होना चाहिए जो कि सभी उपयोगकर्ताओं के लिए खुला और सुगम हो। क्या यह कक्षाकक्ष के पास होना चाहिए? शिक्षकों और छात्रों से पूछिये कि वे इस विषय में क्या सोचते हैं? ध्वनि प्रदूषण, गर्मी और धुएँ से बचने के लिए यह रसोई, गली या खेल के मैदान के आसपास नहीं होना चाहिए। ऊपर की मंजिल, नीचे की मंजिल या फिर प्रधानाध्यापक के कमरे में यहाँ भी उपयोगकर्ता का फीडबैक महत्वपूर्ण है।

2. **भौतिक स्थिति –** लुभावना, स्वागत करता, सुन्दर, रंग–बिरंगा।

   याद रखिये कि यह एक ऐसा पुस्तकालय है जिसका उपयोग अधिकतर युवा लोग करते हैं। असल में ये लोग भी पुस्तकालय में इन सभी पहलुओं को लाने में मदद कर सकते हैं।

   प्रवेश द्वार चौड़ा होना चाहिए ताकि लोगों को अन्दर आने में परेशानी ना महसूस हो। यदि आपके पास जगह कम हो तब भी अलग–अलग गतिविधियों के लिए अलग–अलग जगह उपलब्ध करवाने की कोशिश करें। उपलब्ध स्थान के अनुसार फर्निचर हो। उदाहरण के तौर पर अनौपचारिक रूप से बैठकर पढ़ने के लिए आरामदायक कुर्सी और तकिया, संदर्भ क्षेत्र के लिए कुर्सी और मेज़, कहानी और अन्य समूह गतिविधियों के लिए दरियां, व्यक्तिगत पाठकों के लिए छोटे–छोटे कोने, अलमारियों के पास छोटी कुर्सिया ताकि किताबें ढूँढ़ते समय बैठा जा सके, बाहर बैठकर पढ़ने के लिए पत्थर की बेंच, किसी के भी पढ़ने के लिए पुस्तकालय में पिक–अ–बुक बॉक्स आदि चीजें होनी चाहिए।

   पुस्तकालय के विभिन्न पहलुओं से जुड़े पोस्टर्स बच्चे बड़ी खुशी से बनाएंगे। डिस्प्ले के माध्यम से बच्चे अपनी लिखी हुई चीज़ें, स्केच, प्रोजेक्ट्स, क्राफ्ट कार्य, फूलों की व्यवस्था और कैलेन्डर आदि को साझा करते हैं। पुस्तकालय में लगे सूचना–बोर्ड भी पुस्तकालय प्रभारी का परमाधिकार क्षेत्र नहीं है बल्कि यह एक संयुक्त जिम्मेदारी है। इसलिए बच्चे और शिक्षक पुस्तकालय प्रभारी के लिए रूचिकर क्लिपिंग्स, प्रदर्शनी की घोषणा, चित्र और फोटोग्राफ्स, कार्टून और चुटकुले आदि लाते हैं ताकि वो उन्हें सूचना बोर्ड पर लगा सके। यदि छोटे बच्चों के लिए लगाई गई सामग्री उनकी आँख के स्तर पर होती है तो उन्हें अच्छा लगता है।

   यहाँ पर कुछ '***टाकिंग पोईन्टस***' जैसे इटली का शांति ध्वज, लोथल की कुछ चट्टाने, एक मेले की स्क्रेच बुक, अरविन्द गुप्ता की विजिट के समय की उनकी बनाई मिश्रित चीज़ें ..... आदि भी है। इनमें से हर चीज़ का बच्चों के लिए कुछ महत्व है और वे इन के बारे में नए आगन्तुक को या नये छात्रों से बात कर सकते हैं।

3. **चयन और संग्रह –**

   अगर पुस्तकालय प्रभारी चयन समिति में नहीं है, तो यह बहुत अच्छा होगा कि वह भी इस समिति में हो। ऐसा इसलिए होना चाहिए क्योंकि वे संग्रह, उपयोगकर्ताओं और उनकी जरूरतों के बारे में जानती हैं।

   पिछले साल के नमूनों, वर्तमान ज़रूरतों और भविष्य के विकास को ध्यान में रखते हुए एक बजट सुनिश्चित कीजिए। अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं में छपी समीक्षाओं को पढ़कर अपने संग्रह में नई सामग्री को जोड़ते रहें और उन्हें उपर रखें ताकि उपयोगकर्ता भी उन्हें पढ़कर बुद्धिमतापूर्ण सुझाव दे सकें।

किताबों की दुकानों पर नियमित रूप से जाते रहिये। नये विचारों के लिए जब भी संभव हो अन्य पुस्तकालयों में भी जाईए। यह सुनिश्चित करे कि आपके पास एक से अधिक भाषाओं में सामग्री उपलब्ध हो। कोशिश करे कि कुछ किताबें ब्रेल लिपि की भी हो। कुछ पुरालेख भी हो तो कैसा रहे? ऐसी कुछ सामग्री भी जुटाने की कोशिश करें। ऑडियो–वीडियो टेप, सी.डी., डी.वी.डी. और सी.डी. रोम भी रखें। इस तरह से आप अपने उपयोगकर्ताओं को सूचना प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों के बारे में जागरूक कर पाएँगे।

अब आता है आपके पुस्तकालय का उपयोग करने वाले लोगों का असली काम। एक डिब्बा या फिर विश–लिस्ट नोटबुक रखकर हम पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं से सुझाव मांग सकते हैं। इसे समय–समय पर देखते रहें और अपने उपयोगकर्ताओं को कुछ फीडबैक दें। छात्रों के समूहों को किताबें चुनने और खरीदने क लिए दुकानों या पुस्तक मेलों पर ले जाएँ।

**4. व्यवस्था और पहुँच –**

यहाँ पर असली बात सामने आती है। जब पुस्तकालय प्रभारी वहाँ नहीं थे तो क्या पुस्तकालय में ताला लगा हुआ था। हालांकि ये थोड़ा क्रांतिकारी सा लगता है लेकिन इसे अपने कानों में गूंजने दो ... कैसा रहे यदि हर रोज ताला खोलने बन्द करने की जिम्मेदारी बड़े छात्रों को देते हुए जगह को खुला ही रखा जाए। आप ऐसा कर सकते हैं यदि *जिम्मेदारी के साथ स्वतन्त्रता* विद्यालय के मूल दर्शनों में से एक हो। तब पुस्तकालय भी स्कूल के काम के साथ सामंजस्य बैठा पाएगा। सहयोग, सुविधा और सामान्य ज्ञान पर आधारित परम्पराएँ बच्चों को अपनी तरफ खींचती है और वे उसके मुताबिक चलने लगते हैं। मसलन ....

अगर किताबें गायब है या खो रही है, तो वहाँ एक कॉपी रखी है जिसमें लोग इनके बारे में लिख सकते हैं। इससे यह नुकसान एक तथ्यात्मक घटना बन जाएगा जिसमें चोरी और संदेह का मकसद जुड़ा हुआ नहीं होगा। कुछ लोग किताबों को याद रखने और ढूँढ़ने के लिए कुछ चित्र भी लगा देते हैं। मेरे हिसाब से किताब कभी खोती नहीं है। इसमें हर तीन महीनों में और कभी–कभी छः महीने में थोड़ी उथल–पुथल होती है। किताबें देरी सें लौटाने पर कोई जुर्माना नहीं है, तो समूहों में और व्यक्तिगत रूप से भी समय–समय किताबों के बारे में याद दिलाया जाता है। कुल मिलाकर भूलक्कड़पन कोई बड़ा मसला नहीं है। बतौर एक पुस्तकालय प्रभारी आपको अलग–अलग तरीकों से उपयोगकर्ताओं से बातचीत और जुड़ाव बनाए रखना चाहिए, CFL में हम जो भी कुछ करते हैं, वो सब इसी पर आधारित है।

क्या आपकी किताबों की अलमारियाँ खुली हुई और सुगम हैं। उम्मीद है आपके यहाँ अलमारियाँ बहुत ऊँची नहीं है। और दीवारों के सादृश्य है। किसी भी स्थिति में इस बात का पूरा ध्यान रखें कि छोटी बच्चों के लिए रखी गई किताबें उनकी पहुँच में हों। क्या बच्चे पुस्तकालय में स्वतंत्रतापूर्वक घूम सकते हैं, ढूँढ़ सकते हैं और पढ़ सकते हैं?

उपयोगकर्ता को आत्मनिर्भर बनाने में इस बात का बहुत महत्व है कि सामग्री रखी किस तरह से हुई है। डुई की दशमलव वर्गीकरण पद्धति हालांकि ज़्यादा संतोषप्रद नहीं है फिर भी एक व्यापक खाका प्रदान करती है जिसके भीतर स्थानीय विविधताओं को काम में लिया जा सकता है। अन्य पुस्तकालयों पर भी सामान्यतया इसका प्रयोग होता है तो आपके युवा उपयोगकर्ताओं को भी आसानी रहेगी, चाहे किसी भी पुस्तकालय में वे जाए।

अलग–अलग वर्गों के लिए अलग–अलग रंगों की पट्टियाँ भी काफी मददगार हो सकती हैं। जो बच्चे किताबें लौटाते हैं, उनके लिए यह बहुत काम की चीज है।

आखिर में, अगर आपने अभी तक अपने संग्रह का कम्प्यूटरीकरण नहीं किया है तो जल्दी से इसके बारे में सोचना शुरू कीजिए, इसके बहुत फायदे हैं और पुस्तकालय प्रभारी के लिए उपयोग पर निगरानी रखने और खुलापन बनाए रखने में भी काफी आसानी हो जाती है। हमारे पास एक कार्यक्रम है जिसे हमारे एक पुराने छात्र ने हमारे लिए बनाया है। 6 से 60 साल तक के लोगों के लिये इसका उपयोग करना काफी आसान है। कई विशेषताओं में से इसकी एक विशेषता यह है कि हम किसी दूसरे द्वारा ली गई किताब को अपने लिए रखवा सकते हैं। और व्यक्ति के पास संदेश चला जाता है कि वह उस किताब को जल्दी से जल्दी लौटा दे, क्योंकि अमुक व्यक्ति को उस किताब की ज़रूरत है। काम

करने का यह एक विशिष्ट तरीका है जिसमें सहयोग करने का दायित्व लोगों पर होता है ना कि किसी व्यवस्था पर। आप भी अपने किसी पुराने छात्र से बात कर सकते हैं जो इस प्रकार का सॉफ्टवेयर पैकेज दे सकता हो।

रखरखाव और सार–संभाल पुस्तकालय का एक समेकित हिस्सा है। छात्र सहयोगियों की मदद लेने के लिए विकल्प बनाईए। CFL में हर सुबह छात्र सामुदायिक काम करते हैं और पुस्तकालय में उनके कामों में से एक काम है लौटाई गई पुस्तकों को वापस उनके स्थान पर रखना। एक समूह ऐसा भी है जो कटी–फटी किताबों को सृजनात्मकता के साथ ठीक करता है। कभी–कभी हम पुस्तकालय कालांश का उपयोग इस काम के लिए और अन्य पुस्तकों की देखरेख संबंधी गतिविधियों के लिए करते हैं। हमने देखा है कि बच्चे ये सब खुश होकर करते हैं ना कि इसे बोझ के रूप में करते हैं। बाद में हम पुस्तकों को डिस्प्ले करते हैं। एक आखिरी बात। भारत में हम लोग व्हीलचेयर मुहैया करवाने के बारे में अक्सर बेपरवाह रहते हैं। अगर आपके पास यह सुविधा नहीं है तो क्या आप इसके लिए ज़ोर दे सकते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस बारे में आपकी जागरूकता को देखकर आपका प्रबन्धन खुश होगा।

**5. उपयोग –**

हमने जिन सभी बातों का पहले ज़िक्र किया है उनका स्वाभाविक परिणाम है पुस्तकालय का उपयोग। कुछ अन्य विचार जो कारगर रहे वे है–

1. बड़ों और छोटों के लिए गैर काल्पनिक किताबें की अलग–अलग आपमुरिया। इसमें विषय अलमारियों की पुस्तकें हो सकती है जो सामान्य रूचि की होती है पर जिन्हें अक्सर पढ़ा नहीं जाता। इस संग्रह को हर बार बदला जाता है और तब यह ठीक से काम करता है।
2. वे नई किताबें जो नई किताबों के डिस्प्ले से हट जाती है, वे दबी छुपी विषयपुस्तकों की अलमारियों में छिप जाएंए इससे पहले उन्हें हाफ–वे–होम अलमारी में रखा जाता है। हमने एक साल के लिए इन पुस्तकों को इस अलमारी में रखने की योजना बनाई है।
3. प्रोजेक्ट के विभिन्न हिस्सों के अन्तर्गत बच्चों ने अलग–अलग प्रकार की किताबें बनाई है। हमारे पास इनके लिए एक विशेष अलमारी है जिसे हम इन–हाऊस प्रकाशन कहते हैं।
4. किताब को गोद लेना। बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे किसी किताब या लेखक को गोद ले। इसका मतलब यह है उन्हें उन किताबों की स्थिति के बारे में पता होना ही चाहिए और वे इस बारे में आश्वस्त हो कि वह किताब पढ़ी जा रही है और उसका ध्यान रखा जा रहा है।
5. किताबों में से कहानियाँ सुनाना और पढ़ना भी पढ़ने को बहुत प्रोत्साहित करता है।

इन सब के अलावा उपयोग को बढ़ावा देने के लिए आप गतिविधियाँ, खेल, प्रोजेक्ट लेखकों की विजिट, वाद–विवाद और कई अन्य तरीके काम में ले सकते हैं।

मैं इस बारे में पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूँ कि ये कहाँ जाएगा लेकिन मुझे लगता हैं कि बच्चों के साथ पुस्तकालय के खातों और प्रक्रियाओं के बारे में बच्चों को बताना बहुत ही रूचिकर होता है। एक पसंदीदा कहानी है जिसमें ऑक्सफोर्ड की बॉडलियन लाईब्रेरी में जब भी किसी उपयोगकर्ता से यदि कहा जाऐ तो उसे लेटिन में एक शपथ बोलनी पड़ती है जिसका मतलब है कि वे आग, पानी, खाने या खराब तरीके से काम में लेकर किताब को कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगें। दूसरा यह है कि पुस्तकालय में अलमारियों को एक दूसरे के सामने रखकर जगह बचाने की कोशिश की जाती है। जब उपयोगकर्ता को कोई विशेष अलमारी देखनी होती है तो वह एक बटन दबाता है तो अलमारियाँ पीछे खिस्क कर जगह बना देती है। वे हमेशा पूछते हैं कि यदि दो लोगों ने दो अलग–अलमारियों से लिए बटन दबा दिया तो क्या होगा। मैं तो कभी भी समझ नहीं पायी।

**6. मानव संसाधन –**

यह पुस्तकालय का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। एक पुस्तकालय का जीवंत होना उस व्यक्ति पर निर्भर करता है जो उसकी देखरेख करता है। एक पुस्तकालय प्रभारी में खुली पहुँच

होनी चाहिए। ऊपर दिए गए सुझावों को लेना और उन्हें अपनी स्थितियों के अनुसार बदलना या आत्मसात करना भी आपका विशेषाधिकार है। पुस्तकालय के साथ अपने जुड़ाव और ऊर्जा का प्रदर्शन करके आप शिक्षकों और प्रबन्धन में अपनी जगह बना सकते हैं।

अंत में मैं आशा करती हूँ कि आप जो कर रहे हैं उसमें आपको आनंद आ रहा है क्योंकि मेरा विश्वास कीजिए कि ये एक अद्‌भुत दुनिया है।

नीचे कुछ बाते लिखी है जो ठीक है परन्तु पुस्तकालय में ये नहीं होनी चाहिए–

1. पुस्तकालय का अन्य गतिविधियों या आयोजनों के उपयोग करना अच्छी बात है पर इसकी वजह से संग्रह अपनी जगह से नहीं हटना चाहिए। और ये तब होने चाहिए जब वहाँ पर ज्यादा लोग ना हो।
2. एक स्कूल पुस्तकालय में प्राणघातक सन्नाटा और दबी–छुपी आवजों की कोई जरूरत नहीं है। आपसी चर्चाओं और बातचीत की धीमी भनभनाहट हो सकती है।
3. नियम हमेशा पवित्र नहीं होते। विवेक और बुद्‌धि के अनुसार पुस्तकालय प्रभारी इनमें फेरबदल कर सकता है।
4. क्या पुस्तकालय प्रभारी को चुपचाप और निष्क्रय होना चाहिए। बिल्कुल भी नहीं? दिखाने से लिए पुस्तकालय है, पुस्तकालय प्रभारी नहीं। इससे किसी भी घटना या नवाचार को हाईलाईट या प्रोजेक्ट करने का अवसर लेना चाहिए।

## युवा लोगों में किताबों के लिये जुड़ाव पैदा करना

हममें से कई बड़े लोगों की तरह युवा लोग भी जानकारी प्राप्त करने और मनोरंजन के लिये मीडिया, इंटरनेट और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर रहने लगे हैं। प्रौद्योगिकी में हो रही नित नई चकाचौंध और मीडिया की लुभाने वाली विविधता, किताबों से ज्यादा इस ओर खींचती है। बतौर शिक्षाविद् और पुस्तकालय प्रभारी, हमारी प्रतिक्रिया क्या है? पहला तो यह है कि सीखने के इन प्रत्येक माध्यमों के लाभों को पहचानना और आत्मसात करना। यहाँ से हम यह देख सकते हैं कि अपने विशिष्ट सहयोग के लिए किताबें अभी भी महत्वपूर्ण है और यह हर्षपूर्वक, जानकारी देने वाले, प्रेरित करने वाले और मनोरंजन करने वाले माध्यमों के साथ काम में ली जा सकती है।

जब कोई बच्ची पढ़ती है तो उसके और उसकी किताब के बीच में एक प्रकार का संबंध शुरू होता है। यह एक चिर–स्थायी संबंध होता है जहाँ पाठक अपने हिसाब से, बेरोकटोक, किसी भी जगह पर लिखित सामग्री की छानबीन करता है और ये बच्चों के लिए किसी भी स्थिति में बहुत महत्वपूर्ण होता है। छोटे बच्चे कहानियों के लिए हमेशा तैयार होते हैं और जिज्ञासा और आश्चर्य से भरे होते हैं। यही सब कुछ धीरे–धीरे पढ़ने के प्रति प्यार में बदल जाता है। पर हम लोग लापरवाही से और कई बार अनजाने में भी इस ललक को बांध सा देते हैं। घर और स्कूल दोनों प्रकार के माहौल में पढ़ना बहुत थोड़े प्रोत्साहन, अच्छी किताबें से बहुत कम ही रूबरू हो पाना, बहुत ज्यादा टी.वी. देखना, कम्प्यूटर पर खेल खेलने की लत, बहुत सारी दूसरी व्यवस्तताएँ और अत्यधिक अकादमिक दबाव आदि चीजें इस क्रियात्मक बहाव को जैसे थाम सा देती हैं। फ्रेंच गणितज्ञ और दार्शनिक, डेसकाईन कहते हैं, 'सारी अच्छी किताबों को पढ़ने का मतलब है, बीती शताब्दियों के महानतम लोगों के साथ बातचीत करना'। पढ़ने जैसे साधारण काम के द्वारा हम उनसे व्यक्तिगत और सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

लिखित भाषा में वो स्थायीत्व का गुण होता है जिसे आसानी से बदला नहीं जा सकता। पढ़ने से प्रश्न उठते हैं, नए विचार उठते हैं और कल्पनात्मक विचारों की एक श्रृंखला बनती है। पढ़ने जैसे आसान काम से युवा लोग अपनी संवेदन–शक्ति को विस्तार कर रहे हैं। वे मजबूत विषयों, उद्‌बोधक भाषाओं पर अपनी प्रतिक्रियाएँ दे रहे हैं और ऐसे मसलों से रूबरू हो रहे हैं जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। लेखक द्वारा लेखन में जो बारिकीयाँ और जटिलताएँ रखी गई है उन्हें, पत्तियों को पढ़कर पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं।

यह देखने के लिए कि लेखन में कितना सच है और कितना झूठ है, वे सामग्री और रूप दोनों स्तर पर समीक्षा करने की दक्षताएँ विकसित कर रहे हैं। पढ़ने से युवा लोगों, विशेष रूप से 6 से 10 वर्ष आयुवर्ग के लोगों का शब्द भंडार भी विकसित होता है और उनके लेखन को और ज्यादा अर्थपूर्ण बनाने में भी मदद मिलती है। एक अवधि तक लगातार पढ़ते रहने से पाठक तथ्यों और विचारों में अंतर करने में सक्षम हो जाता है तो यह उसे एक विचारक व्यक्ति बनाता है।

छोटी उम्र में बच्चों को काल्पनिक और गैर–काल्पनिक दोनों प्रकार की सामग्री पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने से वे अवधारणाओं, विचारों और प्रक्रियाओं से झूझने में सक्षम हो जाते हैं। इस तरह की सामग्री मिलते रहने से समय के साथ उनमें दुनियादारी की समझ बनने लगती है और आगे के जीवन में गैर काल्पनिक तरह की सामग्री पढ़ने की ताकत भी आ जाती है।

अब मैं उन ज़रूरी बातों पर आती हूँ जो यह सब होने देने की अनुमति देती है। लेकिन पहले एक बार अपने बचपन के बारे में सोचिये आप क्यों पढ़ते थे या नहीं पढ़ते थे। ये दोनों ही बाते बच्चों के पैटर्न के बारे में सीखने में मदद मिलती है। एक नहीं पढ़ने वाले व्यक्ति को पढ़ने के लिए तैयार करना और एक पाठक को उसका पठन और गहरा करने में उसकी मदद करना, दोनों ही चीजों में मुझे एक समान संतुष्टि मिलती है।

नीचे कुछ प्रश्न लिखे हुए है जिन्हें आप चेक–लिस्ट के तौर पर काम ले सकते हैं–

**वातावरण –**

1. *क्या आपने अपने पुस्तकालय में पढ़ने के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करवाया है?* कोशिश करे कि आपका पुस्तकालय आकर्षित करने वाला, तेजवान और रंगों से भरपूर लगे। पोस्टर्स, स्केच और सॉफ्ट बोर्ड की सहायता से ऐसा किया जा सकता है और इसमें आपके छोटे–छोटे उपयोगकर्ता भी आपकी मदद कर सकते हैं।

2. *क्या पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री छोटे बच्चों के लिए रूचिकर, नवीनतम, और प्रासंगिक है?* पुस्तक समीक्षाएँ पढ़कर, किताबों की दुकानों और मेलों में जाकर नई किताबों के बारे में अपनी जानकारी बनाए रखें। बच्चों के सुझावों के लिए एक कॉपी या फिर एक बॉक्स बनाए और इन सुझावों को पढ़ने के लिए समय निकाले। किताबों की दुकान पर बच्चों को भी अपने साथ ले जाएँ।

3. *क्या आपके पुस्तकालय में पढ़ने वाली जगह आरामदायक और आकर्षक है?* अलग–अलग प्रकार के पढ़ने के लिए अलग–अलग प्रकार की बैठक व्यवस्था रखें। जैसे संदर्भ पुस्तकें, कम्प्यूटर उपयोग, जर्नल, पत्रिकाओं और अलमारियों में किताबें ढूँढ़ने के लिए अलग–अलग प्रकार की बैठक व्यवस्था रखे। छोटे–छोटे खाँचे और कोने रखने की कोशिश करें। बच्चों को ऐसी जगहों पर बैठकर पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

4. *आस–पास के माहौल का समेकित हिस्सा होने के नाते क्या आप मित्रवत और सुगम्य हैं?* कई बार ऐसा होता है कि बड़े–बड़े लोग अपने स्कूल और कॉलेज लाईब्रेरियन को याद करते हैं और उनके प्रति गहरा आदर और स्नेह रखते हैं। क्या आप इसके योग्य है।

**उन्मुखीकरण–**

सबसे बेहतर क्या है, यह बच्चों को बताने से आप इस बारे में आशवस्त हो सकते है कि वह अपने आपके लिए आदर्श स्वयं ही तय कर लेगा।

1. *क्या आप अपने पुस्तकालय की किताबें के बारे में उत्कृष्टता के कुछ मानक तय कर सकते हैं?* इस बात का ध्यान रखें कि जब भी आप किताबें खरीदे या पत्रिकाओं के लिए सब सबस्क्राइब करें तो अन्य शिक्षकों, प्रबन्धन, अन्य पुस्तकालयों और समीक्षाओं से सलाह जरूर लें। जहाँ तक संभव हो सके नई पुस्तकों को उनके लेखक के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी के साथ ही प्रस्तुत करें। आप यह भी कर सकते हैं कि किन्हीं शिक्षक से या फिर अभिभावक से कहे कि वे प्रार्थना सभा के दौरान अपनी पढ़ी गई किसी किताब की कुछ खास बातें बच्चों के साथ बाँटे। पुराने छात्रों से भी कभी–कभी यही करने को कहा जा सकता है। पुराने छात्र महान आदर्श होते हैं।

2. *क्या आप ब्राउज़िग के महत्व को स्वीकार करते हैं और सक्रिय रूप से इसके लिए समय देते हैं?* यदि ऐसा है तो कुछ अद्‌भुत होता है। जिसे कहते हैं कि किसी अचानक हुई घटना से उपयोगी और अप्रत्यशित अन्वेषण की शक्ति सी आ जाती है।

3. क्या आपके पास अच्छे पत्रिका संग्रह की सदस्यता है? कई कॉलेज छात्रों के पास केवल ''शॉर्ट रीड'' का ही समय होता है तो आपकी पत्रिकाएँ ही यह सुनिश्चित कर सकती है कि उनमें पढ़ने की आदत जिंदा रहे।

4. अपने छात्रों को अन्य पुस्तकालयों में ले जाने की कोशिश कीजिए। छात्रों और बच्चों दोनों के लिए सीखने का यह एक अच्छा अनुभव रहेगा।

**आसान पहुँच–**

इसमें किताबों की दुकानों पर अच्छी सामग्री की उपलब्धता और पुस्तकालय में उपयोगकर्ताओं के लिए सुगमता दोनों शामिल है।

1. क्या आपके पुस्तकालय में खुली पहुँच है? कृपया अपनी आलमारियों का ताला मत लगाईये या फिर किताबों को अलमारियों में मत बंद कीजिए। किताबें देखी जानी चाहिए, छुई जानी चाहिए, महसूस की जानी चाहिए, पलटी जानी चाहिए और अंततः पढ़ी जानी चाहिए। यदि आप किताबों के फटने, चोरी या फिर उनके खराब होने के बारे में चिंतित है तो लोगों से सीधा इसके बारे में बात करें। वे आपकी इस बात का सम्मान करेंगे और जो कुछ लोग पुस्तकालय का दुरूपयोग कर रहे हैं उन पर निगरानी भी शुरू हो जाएगी।

2. क्या आपके यहाँ किताबें ढूँढ़ने और लौटाने के आसान तरीके हैं? यह बहुत महत्वपूर्ण है। कम्प्यूटर का उपयोग करे और चीजों को आसान बनाएँ। लोगों को स्वयं की निगरानी रखने को कहकर उन्हें विश्वास में लें। उनसे खूब बातें कीजिए लेकिन सिर्फ बात, भाषणवाजी नहीं।

3. क्या आपको पता है कि प्रकाशन की दुनिया ज्यादा जीवंत नहीं है। किताबों की दुकानों में नई किताबों की भरमार आ रही है, पुरानी/उपयोग की हुई किताबों की दुकाने भी बढ़ रही है। यानी लोग पढ़ रहे हैं। और पुस्तकालय प्रभारी होने के नाते हम इसका फायदा उठा सकते हैं।

**प्रोत्साहन–**

1. क्या आप या फिर विद्यालय पढ़ने के महत्व को कम आँकते हैं और इसे पढ़ाई से फर्क़ समझते हैं। जैसा कि हमने पहले कहा है कि यह सीखने का आधार है और प्रबुद्ध प्रबन्धन पहले से ही इस बात को जानते हैं। एक पुस्तकालय प्रभारी होने के नाते आपको इस काम का नेतृत्व संभालना होगा। पुरस्कार से नवाजी गई किताबों और लेखकों की तरफ लोगों का ध्यान दिलाईए। किताब को लिखने वाला व्यक्ति महत्वपूर्ण है। लोगों/छात्रों को इसके बारे में बताईये। कई बच्चे मुझसे आकर पूछते हैं, ''क्या आपने पुस्तकालय की सारी किताबें पढ़ी है''? बेशक मैंने नहीं पढ़ी, लेकिन मैं इन सब किताबों के बारे में कुछ–कुछ जानती हूँ और वे मैं तुम्हें बता सकती हूँ।
2. क्या आप नहीं पढ़ने वालों के साथ भी समान रूप से जुड़े हुए हैं? यदि आप ऐसा करते हैं, तो कई बार कुछ अनपेक्षित घटनाएँ उन लोगों को पढ़ने और किताबों की दुनिया की तरफ खींच सकती है।
3. क्या आपको लगता है कि पढ़ने का महत्व समझने और बच्चों के कम्प्यूटर और टी.वी. के उपयोग पर नजर रखने में आपको अभिभावकों की मदद करने की जरूरत है?

   यदि हाँ, तो कृपया उन्हें अपने पुस्तकालय में बुलाईए, उन्हें अपने लिए किताबें लेने और पढ़ने साथ ही अपने बच्चों के लिए किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। पढ़ने के आनंद और महत्व पर अपने अनुभव उनको बताइए। उन्हें कहिये कि वे अपने बच्चों को जन्मदिन के तोहफे या फिर किस विशेष मौके पर किताबें उपहार में दें। उन्हें उपयोग की गई पुस्तकों की दुकानों के बारे में भी बताइए जहाँ वे अपने बच्चों को ले जा सकते हैं।

**वृद्धि एवं संवर्धन–**

1. क्या आपके यहाँ हर कक्षा के लिए सप्ताह में एक पुस्तकालय पीरीयड है। अगर ऐसा नहीं है तो इसके लिए कहिये। कॉलेज पुस्तकालय प्रभारियों को कुछ ऐसे तरीके खोजने चाहिए जिसमें वे छात्रों को पुस्तकालय की तरफ आकर्षित कर सकें। कविताओं और नाटकों के लिए सत्र रखें। पठन समूह बनाने में उनकी मदद कीजिये। खगोल विज्ञान, फोटोग्राफी और ट्रेकिग में रूचि रखने वाले लोगों को अपनी संस्था में बुलाईए और उनके साथ चर्चा का आयोजन कीजिये। उनसे कहिये कि वे आपके पुस्तकालय से संबंधित सामग्री ढूँढ निकाले और उसे प्रदर्शित करे। इससे छात्रों को प्रेरणा मिलेगी।
2. यदि आपके यहाँ पर ऐसा होता है, तो क्या आप कोई ऐसी गतिविधियाँ करते हैं जो पढ़ने के प्रति जागरूकता और रूचि को बढ़ाती है। जब बच्चे बढ़कर व्यस्क वर्ग में जाते हैं तो हर उम्र पर अपने पठन को और गहरा करने के लिए उनके बढ़ते दिमाग को मार्गदर्शन और पोषण की ज़रूरत होती है। तो बतौर पुस्तकालय प्रभारी और शिक्षक हमें इस योग्य और तैयार होना होगा कि हम उनके पठन को बढ़ा पाएँ।

पुस्तकालय और किताबों के सार–संभाल से लेकर किताबों पर चर्चा और वाद–विवाद जैसी कई गतिविधियाँ वहाँ की जा सकती है।देखिये यदि आप अपने बच्चों को अंध–विद्यालय, वृद्धाश्रम या फिर किसी अनाथालय में हफ्ते में एक बार ले जाकर उनके लिए पढ़ने को कह सकें। ऐसा करने पता लगेगा कि किताबों और पढ़ने के मामले वे कितनी अच्छी स्थिति में है।

अंततः एक युवा व्यक्ति जिसका पठन व्यापक है, वो एक सुव्यवस्थित व्यस्क बनता है। सामाजिक और व्यवसायिक चर्चाओं में वह अपनी पकड़ बनाए रख सकती है। वह बहुत जल्दी से बारीकियाँ, सुझाव, उद्धरण, और संदर्भ पकड़ सकती है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने युवा लोगों का किताबों और पढ़ने से एक सक्रिय और जीवनपर्यन्त सम्पर्क बना पाएं। बेट्रेन्ड रशेल कहते हैं ''किसी किताब को पढ़ने के दो उद्देश्य होते हैं एक तो यह कि आपको उसे पढ़ने में आनन्द आए और दूसरा आप उसके बारे में शेखी मार पाएँ।''

## पढ़ने की आदतों का विकास

कुछ उपयोगी विचार–

1. नई पुस्तकों, अलमारियों में रखी अनछुई पुरानी पुस्तकें, विषय आधारित, सामयिक विषयों पर आधारित या फिर किसी संभावित प्रोजेक्ट की संदर्भ पुस्तकों आदि का साप्ताहिक सिस्प्ले करना।
2. किताबों के चयन में बच्चों की मदद लेने हेतु उन्हें किताबों की दुकानों (विशेष रूप से पुरानी) और पुस्तक मेलों में ले जाना।
3. पुस्तकालय में रखी किताबों में से कहानियां कहना और सुनाना।
4. बच्चों से कहें कि नाटक के रूप में प्रस्तुत करने के लिए एक कहानी चुनें। उनमें से कुछ बच्चे कहानी का कथानक भी लिख सकते हैं।
5. प्रार्थनासभाओं और अन्य अवसरों पर कविताएं एवं छोटी कहानियां पढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। तब वे उपयुक्त सामग्री को ढूंढने के लिए पुस्तकालय में आएंगे।
6. किताबों को संभालने के लिए उपयुक्त समय दें एवं इसे प्रोत्साहित करें। इससे कुछ अद्भूत चीजें निकलकर आएंगी।
7. किताबों पर नियमित चर्चा करें।
8. पत्र–पत्रिकाओं पर भी समय–समय पर चर्चा करें।
9. कभी–कभी किताबों की नीलामी भी करवाएँ।
10. बच्चों से पुस्तकों के लिए आकर्षक ''बुक जैकेट'' बनवाएं। इसमें कवर डिजाईन, लेखक के बारे में जानकारी और पीछे एवं अन्दर से कवर पर पुस्तक समीक्षाएं आदि शामिल किये जा सकते हैं।
11. बच्चों से कहें कि वे अपने पसंदीदा लेखकों को पत्र लिखें। कभी–कभी लेखक इतने सहहृदयी भी हो सकते हैं कि जवाब भेजें या कभी कभी कोई लेखक कॉम्पलीमेन्टरी कॉपी भी भेज सकते हैं।
12. जब किसी किताब को कक्षा के ज्यादातर बच्चे पढ़ चुके हो तो उस पर फिल्म दिखाएं। यह बच्चों को प्रोत्साहित करेगा। या फिर कुछ हिस्से एक हफ्ते में पढ़वाएं और उस हिस्से को अगले हफ्ते दिखाएं।
13. बच्चों से बुक मार्क, पोस्टर, बिल्ले और संकेतक आदि बनवाएं और किताबों पर विज्ञापन बनवाएं।
14. बच्चे ऐसे प्रोजेक्ट्स भी कर सकते हैं जो उनकी अपने और दूसरों के पढ़ने को आगे बढ़ाएं। उदाहरण के तौर पर भी ऐसी किताबें बनवाएं जिन्हें पुस्तकें संग्रह में रखा जा सके।
15. पढ़ने से संबंधित रूचियों का पता लगाने के लिए प्रश्नावलियां बनाएं।
16. विभिन्न विषयों पर ग्रंथसूचियां बनाएं जो कि दूसरे बच्चों को किताबें खोजने में मदद करें।
17. पुस्तकालय पर एक फिल्म बनाएं।
18. आयु एवं कक्षा के आधार पर पढ़ने के पैटर्न्स का पता लगाने के लिए छात्रों एवं अध्यापकों के साक्षात्कार कीजिए।
19. पुस्तकालयों में ''ट्रेजर–हंट'' का आयोजन कीजिए। इससे जुड़े सुराग अलग–अलग किताबों, अलग–अलग खण्डों में छिपे हो सकते है। पहली के लिए पुस्तकालय प्रभारी ऐसा करें और उसके बाद छात्र यही सब पुस्तकालय प्रभारी और अन्य कक्षाओं के लिए करें। दोनों ही तरीकों में किताबों के संग्रह की एक अनौपचारिक खोजबीन हो रही है।

20. विभिन्न प्रकार की प्रश्नोत्तरियां बनाईए जिनमें उत्तर दिया गया हो और सवाल का पता लगाना हो। छोटे आयु समूहों के लिए मूक–पहेलियां मददगार हो सकती हैं। बड़े बच्चों के लिए ''पुस्तकालय में एक मिनट'' खेल अच्छा साबित हो सकता है।

21. बड़े बच्चे अपनी रूचि के विषयों पर छोटे सेमीनार प्रस्तुतीकरण भी कर सकते हैं। इसे तैयार करने में उन्होंने जो पुस्तकें काम में ली हों उन्हें वे डिस्प्ले कर सकते हैं ताकि दूसरे सारे उपयोगकर्ताओं को इस पर और विचार करने का मौका मिले।

22. एक 'बुक–बोर्ड' रखिये जिस पर बच्चे अपनी पुस्तक समीक्षाएं पसंदीदा किताब के पात्रों के चित्र, अपने सुझावों की सूची, ''बुक–ऑफ–द–वीक' जो किसी बच्चे की पसंद हो या फिर शिक्षक का चुनाव हो आदि लगा सकते हैं। पुस्तक समीक्षाओं वाली पत्रिकाओं और अखबारों की कतरन को भी उस पर लगाया जा सकता है।

23. अपने सूचनापट्ट पर आप पुस्तकों के लिए सम्मानित लोगों, या फिर जीवनियों आदि से संबंधित समाचार भी डिस्प्ले कर सकते हैं। साथ ही आप भी इस उस लेखन की ककिताबों से संबंधित चुटकुलें और कार्टून भी लगाएं जा सकते हैं। इन्हें हमेशा बहुत पसंद किया जाता है।

24. किताब को गोद लेना (ब्रिटिश पुस्तकालय, लंदन से लिया गया विचार) एक नोट बुक बनाएं जिसमें बच्चे उस किताब का नाम लिखे जाने वे गोद लेना चाहते हैं। तो उनकी जिम्मेदारी यह होगी कि वे उस किताब को समय–समय पर संभालें। देखें कि उसमें किसी प्रकार की मरम्मत की जरूरत तो नहीं। यह सुनिश्चित करें कि दूसरे लोग इसे पढ़ें और इसे प्यार करें। स्पष्टतया इसके परिणाम आयेंगे।

25. लेखकों एवं अन्य पुस्तक–प्रेमियों को स्कूल में बुलाईये एवं बच्चों से उनकी बात करवाएं।

26. किताबों को बच्चों के घर भेजिए ताकि बच्चे स्वयं उन्हें पढ़ें और उनके दादा–दादी, भाई बहनों और अभिभावक भी उनके लिए पढ़ें। घर से पुस्तकालय का जुड़ाव बनाएं।

27. इसी क्रम में अभिभावकों से कहें कि वे बच्चों के लिए पुस्तक समीक्षाएं पढ़ें, बच्चों को पुस्तक रिलीज में ले जाएं, जन्मदिन के उपहार के रूप में किताबें दें। बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे अपनी पुरानी किताबें ज़रूरतमंद विद्यालयों को दान करें या फिर किसी अनाथालय, अंध विद्यालय आदि में जाएं और वहां के बच्चों के लिए किताब पढ़ें। यह देखना उनके लिए बहुत अच्छा रहेगा कि किताबें कितनी मूल्यवान होती हैं और कई सारे बच्चे पढ़ने की सामग्री का उपयोग करने के लिए कितने उत्सुक होते हैं।

28. बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे पुरानी किताबों की दुकानों पर जाएं और सड़क किनारे के पुस्तक विक्रेताओं गाड़ियों में रखी किताबों को देखें, रूकें और उनमें किताबों को खंगालें। इससे वे अपनी भाग्यशाली खोज की सराहना करना सीखेंगे और काफी कम पैसा भी होगा।

## बच्चों को पुस्तकों की दुकानों और पुस्तक मेलों में ले जाना

सीएफएल में हमने पाया है कि यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है और इसीलिए हम अपने अनुभवों और अवलोकन पर आधारित कुछ सुझाव आपके साथ साझा कर रहे हैं।

**क्यों?**

पुस्तक चुनाव प्रक्रिया में आपके उपयोगकर्ताओं की भागीदारी का यह बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है और इससे संग्रह के प्रति उनमें जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में भी मदद मिलती है। वे विभिन्न प्रकार के लेखकों, चित्रकारों, प्रकाशकों एवं पुस्तकों की दुकानों के बारे में जानते हैं। पुरानी पुस्तकों की दुकानों और पुस्तक मेले में जाना ना भूलें। आप पैसा बचा सकते हैं और अपने बजट में ज्यादा पा सकते हैं।

**ये कैसे करें?**

योजना बनाएं कि एक साल में लगभग तीन समूहों को ऐसे अभियान पर ले जाएं। ये तीन अलग–अलग कक्षाएं भी हो सकती हैं और तीन कक्षाओं से कुछ स्वयंसेवी भी हो सकते हैं। समूह में 20–25 सदस्य होना अच्छी बात है। यदि शिक्षक भी उपस्थित हैं तो यह संख्या 30 तक जा सकती है।

दुकान पर या मेले के लिए आवश्यक समय कम से कम 2–3 घंटे।

**इस अभ्यास के मुख्य अवयव क्या है–**

जिस जगह पर जाना है, वहां पर एक बार पहले जा कर आईये। इसका कारण यह है कि इससे आपको उस जगह के स्वरूप और संग्रह से परिचित होने में मदद मिलेगी। आप उस दुकानदार को भी बता सकते हैं कि आप बच्चों को वहां लाने वाले हैं और उनकी जिम्मेदारी आप पर है। सभी पुस्तक केन्द्र इस विचार को बहुत पसंद करेंगे।

दूसरा, हर दौरे के लिए बजट और विषय या आयु समूह का अपने दिमाग में ध्यान रखें।

तीसरा, समूह के साथ एक बैठक कीजिए जिसमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर बात की जा सकती है–

1. आप, छात्र महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आप जानते हैं कि हमारे पास कौन–कौनसी किताबें हैं और उन्हीं किताबों की दुबारा खरीद को रोक सकते हैं।
2. आप ये बेहतर जानते हैं कि कौनसी किताबें आपके साथियों या आपके छात्रों के लिए ज्यादा रूचिकर और आनन्ददायी हो सकती है।
3. ध्यान रखें कि आप ये किताबें स्कूल के पुस्तकालय के लिए खरीद रहे हैं ना कि सिर्फ खुद के लिए। इसके लिए दृष्टिकोण का व्यापक होना बहुत ज़रूरी है। जो कुछ भी आप चुन रहे हैं वो 20–30 दूसरे लोगों के लिए भी उपयुक्त होना चाहिए।
4. सामग्री, उपयुक्ता, मूल्य, सामग्री का चलार्थ आदि ऐसे पहलू हैं जो पुस्तकालय के साथ आपकी अंर्तक्रियाओं में रचे–बसे होने चाहिए।
5. चुनने से पहले खोजना/खंगालना, बहुत जरूरी है।
6. अपने आप से सोचने की कोशिश कीजिए और अपने दोस्तों से बहुत ज़्यादा प्रभावित ना होईए। हमें विभिन्न प्रकार एवं प्रारूप की सामग्री की जरूरत है।

**दौरान–**

आप सब स्कूल में एक साथ गए हैं या फिर दुकान या मेले के बाहर मिले हैं। पहले से तय किये गए बिन्दुओं का एक पुनरावलोकन कीजिए ताकि सबको सारे बिन्दु दोबारा ध्यान में आ जाए। चलो अन्दर चलें। 45 मिनट तक किताबों को खंगालने दीजिए और उसके बाद ही संभावित पुस्तकें इकट्ठा करना शुरू कीजिए।

सारी किताबों को दुकान के किसी कोने में जमा कीजिए। (दुकान के सहायक भी इसमें आपकी मदद कर सकते हैं।) इस दौरान आप और अन्य शिक्षक यदि उपस्थित हो तो चारों तरफ घूमकर देख लें कि सब जुड़े हों। फिर सब लोगों को कोने में बुलाईये और अब शुरू होती है असली कसरत!

हर किताब को उठाईए और 'उसे जल्दी से ये बताने को कहिए कि उसने वह किताब क्यों चुनी? तब तय कीजिए कि इसके लिए 'हां' 'ना' है या फिर एक बार उसे संभावित सूची में रख देना है। इसमें और 45 मिनट लग जाएंगे। फिर एक केलकुलेटर मंगवाईए और एक छात्र से कहें कि दो पूरी कीमत निकालें। यदि वह कीमत उपलब्ध बजट से कम है तो संभावित ढेर में और किताबें उठाई जा सकती हैं।

अब आपके पास पहले से तय किये गए खर्च से मेल खाता संग्रह होना चाहिए। दुकान के लोगों से कहें कि आपका काम हो चुका है और किसी भी प्रकार के व्यवधान के लिए अफसोस जाहिर कर लें। कुछ छात्र बिलिंग और भुगतान से काम का निरीक्षण कर सकते हैं। इसके बाद हर छात्र से एक किताब चुनने को कहें जिसे वह स्कूल के सामने रखना चाहते है और उसे वह किताब घर के लिए पढ़ने को दे दें। यदि बजट में संभव हो तो बच्चों को एक आईस्क्रीम पार्टी दी जा सकती है।

**बाद में**

यदि संभव हो तो अगले हफ्ते में स्कूल की प्रार्थना सभा में खरीदी गई किताबों का प्रस्तुतीकरण कीजिए जिसमें बच्चे व्यक्तिगत रूप में अपने द्वारा चुनी गई किताबों को दिखाएंगे और बताएंगे कि उन्होंने वह किताब क्यों चुनी।

एक सप्ताह के लिए पुस्तकालय में किताबों को डिस्प्ले कीजिए। किताबों का नामांकन करते समय किताब में उस बच्चे का नाम लिखिए, जिसने उसे चुना है। यह एक प्रकार की पूरी जानकारी है जो कि कुछ वर्षों बाद बहुत ही रोचक और मददगार हो सकती है।

**फायदे–**

छात्रों को चयन के मूलाधार और अन्य संबंधित मसलों के बारे में जानकारी मिलती है। वे गुणवत्ता सुनिश्चित करना सीखते हैं। वे संग्रह और उपयोग के लिए स्वयं को दायित्व समझते हैं। बड़े होने के नाते हमें भी पता चलता है कि उपयोगकर्ताओं को कैसे सुना जाता है और उनके सुझाव को कैसे महसूस किया जाता है कुद मिलकर यह एक बहुत बड़ी मदद होती है कि अच्छी किताबों को ढूंढने के लिए इतने सारे लोग हों। एक बार जब किताबें पुस्तकालय में आ गई हैं तो जिन बच्चों ने उन्हें चुना है वे उन किताबों को दूसरों तक ले जाने का काम करें ताकि पूरी वितरण प्रक्रिया बंटी हुई हो।

**नोट–** पुस्तक मेले में हम समूह को तीन समूहों, भाषा से संबंधित किताबों, आयु अनुरूप किताबों और गैर काल्पनिक किताबों में बांट लेते हैं और अपनी–अपनी राह पकड़ लेते हैं, बेशक हर समूह के साथ एक बड़े व्यक्ति या फिर किसी बड़े छात्र का होना जरूरी है। वैसे क्योंकि हम ये कई सालों से कर रहे हैं तो हमारे पुराने छात्र छोटे छात्रों के समूह के साथ काम करने में काफी सक्षम हैं।

**विभिन्नताएं / विविधताएँ**

- ऐसे बच्चे जो मुश्किल से पढ़ते हैं।
- पुरानी किताबों की दुकान पर ले जाना।
- ऐसे समूह जो आकर्षक चित्रों वाले बाल साहित्य को ढूंढ रहे हों।
- कला एवं उद्योग समूह
- खेलों में रूचि रखने वाला समूह– और ऐसा कोई अन्य समूह यदि आपको मिले।

## कहानियां कहना एवं सुनाना

कहानियां कहना सुनना हर उम्र के बड़ों और बच्चों को हमेशा से मोहित करता है तो एक पुस्तकलाय के संसाधनों में से कुछ को कहानी के रूप में सुनने को आतुर अपने उपयोगकर्ताओं को दे पाएं।

6 से 10 साल के बच्चों के लिए आप अपनी सुविधा के अनुसार कहानियां पढ़ या सुना सकते हैं। बड़े बच्चों के प्रति सप्ताह को सतत कहानी या उपन्यास पढ़ा जा सकता है। यदि किसी किताब का फिल्म रूपान्तरण उपलब्ध है तो वह भी दिखाया जा सकता है। यह किताब पढ़ने के बाद की चर्चा के रूप में किया जा सकता है और फिल्म दिखाने के बाद भी किताब पढ़ने को दी जा सकती है।

6 से 10 साल तक के बच्चों को अच्छी लगने वाली किताबें–

1. Pinocchio by Carlo Collodi
2. Alice in Wonderland by Lewis Carroll
3. The Laura Ingalls Wilder series (about the young Laura)
4. Black Beauty
5. Who will be Ningthou? By Indira Ghosh
6. Bishnu the Dhobi Singer by Subhadra Sengupta
7. The Emperor's Nightingale by Hans Christian Andersen
8. The Little Fir Tree by Hans Christian Andersen
9. Ancient Bird legends of India compiled by Shanta Rameshwar Rao
10. Arabian Nights

11 से 14 साल तक के बच्चों को अच्छी लगने वाली किताबें–

1. Watership Down by Richard Adams
2. The Hobbit by J.R.R. Tolkien
3. Swami and Friends by R.K. Narayan
4. Mahabharata for Children by Shanta Rameshwar Rao
5. The Iliad and the Odyssey by Homer. (A simplified translation will be ideal)
6. How much land does a man require? Short story by Leo Tolstoy
7. The Man who planted Trees by Jean Giono
8. Any good science fiction stories by Isaac Asimov, Ray Bradbury, Arthur C. Clarke etc.
9. Stories by Jim Corbett
10. Tom Sawyer by Mark Twain

कुछ कहानियां जो 14 और उससे ज्यादा उम्र के बच्चों को अच्छी लगी–

1. Great Expectations by Charles Dickens
2. Three men in a boat by Jerome K. Jerome
3. Father Brown stories by O.K. Chesterton
4. Translations of classic stones by Premchand, Masti Venkatesh lyengar, Kalki, Rabindranath Tagore etc.
5. The Periodic Table by Primo Levi
6. Short stories by Guy de Maupassant
7. Short stories by Saki
8. Any good biography
9. King Solomon's ring by Konrad Lorentz
10. Surely you're joking, Mr. Feynmann

**फायदे** : सबसे पहला तो यह कि इससे बच्चे सुनने की कला सीखते हैं। बड़े होने के साथ साथ वे लखकों की शैली, विषय सामग्री, चित्रों आदि में भेद करना सीख जाते हैं। कई कहानियों में छिपे हुए मूल्य और सिद्धांत होते हैं। महत्वपूर्ण मुद्दों पर जोर दिया जा सकता है और बच्चे और युवा लोग उन्हें ग्रहण कर सकते हैं। कहानियां कल्पनाओं को झकझोर देती हैं और सहानुभूति विकसित करती हैं। कई विषय बच्चों की कंडिशनिंग को भी बदल देती हैं। अंततः, कहानियां सुनने–सुनाने के दौरान बड़े और बच्चें को साथ में जुड़ने का मौका भी मिलता है।

**कुछ महत्वपूर्ण सुझाव :**

ऐसी कहानी को चुनने का प्रयास करे जिसका स्तर आपके श्रोताओं के स्तर से थोड़ा ज्यादा हो। इस तरह से आप उन्हें चुनौती के स्तर पर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। इसके अलावा ऐसी किताबें चुनने की कोशिश कीजिए जो आमतौर पर नहीं उठाई और पढ़ी जाती। इस तरह से आप ऐसी किताबों को बड़ी संख्या में पाठकों तक पहुँचा पाएँगे। अंततः हर कोई कहानी सुनना पसंद करता है। इससे कहानी को पढ़ने में या पढ़कर सुनाने में कोई बाधा या झिझक मत महसूस कीजिए। आप जल्दी ही पाएँगे कि आपके सामने ऐसे श्रोता है जो कहानी में खोए हुए हैं ना कि आप में।

## पुस्तक चर्चा

पुस्तक चर्चा का मतलब है कक्षा का एक छात्र अन्य छात्रों के सामने एक पुस्तक पर प्रस्तुतिकरण करे। 45 मिनट के एक कालांश में दो बच्चे अपने द्वारा हाल ही में पढ़ी गई किताब पर बात कर सकते हैं। यह गतिविधि एक शैक्षणिक वर्ष में एक बार प्रत्येक कक्षा या चयनित कक्षाओं के साथ की जा सकती है।

**तैयारी :**

1. इस विचार को बच्चों के साथ साझा करें और उन्हें बताए कि स्वयं या किसी पुराने छात्र द्वारा अपनी पढ़ी गई किसी कहानी जिसके बारे में सब अच्छी तरह जानते हैं, जैसे "The three little pigs" या अकबर बीरबल पर प्रस्तुतिकरण करना कितना फायदेमंद रहेगा।
2. उन्हें इसके स्वरूप के बारे में बताइए या फिर इसे एक बड़ी शीट पर लिख कर डिस्पले में रख दीजिए।
3. सुविधा के लिए ''बात करने वाले बच्चों'' के क्रम के बारे में योजना बना कर उसे केलेण्डर में दर्ज कर दीजिए।
4. प्रस्तुतिकरण की व्यवस्था एवं तैयारी के बारे में उन्हें कुछ टिप दीजिए।
5. यदि वे चाहें तो पुस्तक चुनने में भी उनकी मदद कीजिए।

**प्रस्तुतिकरण :**

हर छात्र इस बारे में बात करे :

1. पुस्तक का शीर्षक। क्या यह किसी श्रृंखला का हिस्सा है? यदि ऐसा है तो अन्य शीर्षक कौन–कौन से हैं?
2. लेखक एवं उनके बारे में कोई भी जानकारी। छात्र जैसे– जैसे पुराने होते जाएंगे यह जानकारी उतनी ही गहरी होती जाएगी।
3. चित्रकार। इनके द्वारा चित्रांकित अन्य पुस्तकों का भी ज़िक्र करना।
4. किताब या कहानी का प्रकार (साहसिक, रहस्यात्मक, काल्पनिक, जंगली जीवन, विज्ञान, हास्य, मानवीय रूचियाँ आदि)।
5. कहानी का संक्षिप्त ब्यौरा (पूरी कहानी नहीं)। यह ध्यान रखें कि कहानी का अंत नहीं बताना है।
6. लेखन शैली (संवादात्मक, व्याख्यात्मक, आदि)।
7. मुख्य पात्र और उनमें से यदि वे किसी के बारे में जानते हैं। और कैसे जानते हैं?
8. एक या दो छोटे–छोटे संक्षेपण पढ़नां
9. उनकी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया और इसका कारण।
10. प्रस्तावित पाठक स्तर एवं रूचि।
11. उन्होंने ये किताब क्यों ली? क्या कोई बता सकता है।
12. कोई अन्य रूचिकर बात जो उन्होंने नोटिस की हो।

**चर्चा :**

पुस्तक चर्चा का यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। श्रोताओं के प्रश्नों के लिए समय दिया गया है। पुस्तकालय शिक्षक बिना किसी व्यवधान के इस चर्चा का मार्गदर्शन करे। प्रत्येक श्रोता में स्वयं प्रश्न करने की इच्छा होनी पड़ेगी। इससे इस कक्षा में जो पहलू एवं बारिकियाँ उभरकर आई उनसे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। अगर पुस्तक में कुछ संवेदनशील मुद्दे जैसे– लिंग भेद, भेदभाव, कामुकता, विकलांगता, पूर्वाग्रह आदि शामिल होते हैं तो इस चर्चा उन पर भी बड़े स्वाभाविक तरीके से बात की जा सकती है। इसीलिए जरूरी है कि आपके पुस्तकालय में बच्चों और युवाओं के लिए ठीक से लिखी गई पुस्तकें उपलब्ध हो। कुछ किताबें जिन पर अच्छी चर्चा की जा सकती हैं– हेरी पोटर सीरिज, Journey to Jo' burg, to Kill a mocking bird, जुड़ी ब्यूम एवं अन्य की पुस्तकें। (कुछ अन्य पुस्तकों के लिए हमारा संकलन देखें)

**आउटकम / परिणाम**

बच्चे पुस्तकें पढ़ने और अलग–अलग तरह से उनकी प्रशंसा के लिए प्रोत्साहित हुए उसके प्रस्तुतिकरण की योजना बनाने अपनी वार्ता को बिन्दुओं के रूप में व्यवस्थित करने, धारा प्रवाहिता खोजने और खासकर चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित हुए। अक्सर वे प्रस्तुतिकरण वाली पुस्तक को लने हेतु भी आकर्षित हुए।

**अन्त में एक शब्द :**

असाधारण एवं अच्छी तरफ से लिखी गई पुस्तकों को पढ़ने से बच्चों के शब्द ज्ञान, वर्तनी एवं समझ में सुधार करने में मदद मिली। यह उनको लोगों, मुद्दों को समझने और पाठ की समीक्षात्मक प्रशंसा का विस्तृत दृष्टिकोण भी देता है पूर्वाग्रह युक्त कथानक एवं पात्रों वाली पुस्तके मुश्किल ही अच्छे लेखन की क्षमता या पहचान उपलब्ध करवाती है। इसलिए पुस्तकालय शिक्षक और अभिभावक के रूप में युवाओं के लिए उपलब्ध विविध प्रकार की सामग्री के बारे में जानने हेतु खुद को तैयार करें।

**उपयोगी संदर्भ :**

Useful references:


1. Article on "Children and Reading[11] in the Journal of the Krishnamurti Schools, 2006
2. Book Lists given along with hand cuts.
3. Some book reviews written by students in the Journal of the Krishnamurti Schools.

## किताबों की नीलामी

यह गतिविधि किताबों के लिए उत्साह जगाने के लिए बनाई गई है और इसके लिए नीलामी का सहारा लिया गया है। यहाँ पैसे का कोइ लेन–देन नहीं होगा ना ही कोई बच्चा किसी किताब को खरीदेगा। किताब को अपने पास रखने के लिए बोली लगानी होगी.... देखते है ये कैसे होता है।

बच्चों का एक समूह अपने सहपाठी समूह या अपने से छोटी कक्षा के सामने अपने द्वारा पढ़ी गई किताब के गुणों का बखान करेगा। वे यह प्रदर्शन नीलामी कर्ता के लहज़े में करेंगे। बोली लगाने वालों के पास 20 पत्तियों, कंचों, शंखों , पत्थरों आदि के सेट होने चाहिए, जो वे बोली लगाने के लिए इकट्ठा करेंगे। एक बच्चा इस पूरी गतिविधि का अवलोकन करेगा। यह पुस्तकालय में तब कर सकते हैं जब दूसरी कोई कक्षा वहाँ ना हो या बाहर चले जाइए और खुले में ये गतिविधि कीजिए देखिए कितना मज़ा आता है.....

## **जर्नल की समीक्षा कैसे की जाए** (कक्षा 7 के बच्चों हेतु उपयुक्त)

हर बच्चा पुस्तकालय से एक जर्नल या पत्रिका, समीक्षा के लिए चुन लें। हर बार दो बच्चे निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुतिकरण करें। ये बिन्दु जर्नल या पत्रिका के चुनाव के समय दिए जा सकते है।

- पत्रिका का नाम
- पृष्ठ संख्या
- प्रकाशन स्थान
- पत्रिका का विषय या केन्द्र बिन्दु
- आवृत्ति
- स्कूल में पाठक बढाने के लिए सुझाव
- विज्ञापन
- भाषा
- लेखन शैली
- समाचारों की समकालीनता
- पाठकगण (उम्र, स्तर, रूचि आदि)
- स्थायित्व
- प्रकाशक का नाम
- समालोचना
- स्कूल के संदर्भ में पैसे का महत्व
- पत्रिका या लेख का पक्षपात
- दृश्य सामग्री (फोटोज़ एवं चित्र)

## संदर्भ खेल

प्रासंगिक जानकारी को ढूँढ़ने का तरीका सीखना और ढूँढना पुस्तकालय के काम का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे पहले कि बच्चे कक्षा के किसी प्रोजेक्ट के लिए सामग्री ढूँढ़े, हमें लगता है कि बच्चों को खेलों एवं गतिविधियों के माध्यम से संदर्भ सामग्री से परिचित करवाना जरूरी है। छोटी आयु में जब बच्चे किसी चीज़ व्यक्ति, या स्थान के बारे में जानना चाहे और स्वयं खोज निकाले, तो उनमें उत्साह और संतुष्टि का भाव आता है। वे संदर्भ कार्य के जरिये इच्छित सामग्री को खुद ढूँढ पाते हैं।

तो 7 साल या उससे ज्यादा उम्र के बच्चों के साथ संदर्भ उपकरणों के परिचय की शुरूआत की जा सकती है। बच्चों का संदर्भ क्षेत्र में पहला प्रवेश समारोहपूर्वक होना चाहिए। ये वो जगह है जहाँ से हम लगभग हर एक चीज के बारे में सही–सही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि हमें उन्हें यह भी बताना चाहिए कि कई ऐसे सवाल भी है जिनका जवाब इन्सानों के पास नहीं है। फिर हमें चर्चा द्वारा संदर्भ सामग्री की एक सूची पर बात करनी चाहिए और थोड़ा–अंदाजा इस बारे में देना चाहिए कि ये किस तरह की सूचना मुहैया करवाते हैं। जैसे– **विश्वकोष** सभी विषयों से आधारित सूचना प्रदान करता है जबकि **शब्दकोष** शब्दों का अर्थ, मूल शब्द एवं उसका स्त्रोत, उच्चारण और वाक्य में उसका प्रयोग उपलब्ध करवाता है। शब्दकोश में सारणी, वज़न, माप–तोल, संक्षिप्त रूप, चिह्नों आदि की भी जानकारी उपलब्ध करवाती है। दूसरी तरफ **एटलस** सम्पूर्ण भौगोलिक तथ्यों, भौतिक एवं राजनैतिक, कृषि और मौसम सम्बन्धी जानकारी उपलब्ध करवाता है।

पुस्तकालय षिक्षक को इस प्रकार की जानकारी एवं ज्ञान का उपयोग करने दिखाना चाहिए ताकि बच्चों को स्पष्ट हो जाए। इसलिए हमने निम्न खेल खोजें हैं जो इन संदर्भों का प्रयोग करते हैं।

1. **विश्वकोष** : प्रत्येक बच्चे या चार बच्चों के समूह से उस विषय को लिखने को कहें जो वास्तव में जानना चाहते हैं। ये कर लेने के बाद पुस्तकालय शिक्षक बच्चों को बताएँ कि वे कैसे सही विश्वकोष को चुनकर और जानकारी प्राप्त करें। इस समय यह बात की जा सकती है किस लिए और किस प्रकार विश्वकोष को व्यवस्थित किया जाता है या इस बारे में पहले उनसे अपने अनुमान लिखवा सकते हैं। इसके बाद उन्हें ये स्पष्ट हो पाएगा कि विश्वकोष का उपयोग कैसे करें और जानकारी कैसे जुटाएँ। अब वे खेल खेलने के लिए तैयार है।

   तीन या चार बच्चों के समूह को अपने सवालों के जवाब ढूँढ़ने के लिए पुस्तकालय में भेजिए। अगर आप यह ध्यान रख पाएँ कि सभी समूह अलग–अलग खण्ड़ों को देखे तो असमंजस की स्थिति नहीं बनेगी। लेकिन अगर यह स्थिति है भी तो भी कोई चिन्ता की बात नहीं है बच्चे हर तरह से सीख सकते हैं। एक बार वे जवाब ढूँढ़ लें तो उन्हें पृष्ठ एवं खण्ड संख्या को नोट करने के लिए कहिए और यह पर्चियाँ इकट्ठी कर लें। सब की बारी आने तक ये प्रक्रिया दोहराते रहें। संभवतया ये सब एक पीरियड में किया जा सकता है।

   अगली कक्षा में समूहों से अपने स्त्रोत ढूंढने को कहें फिर उनसे अपने द्वारा देखे गए स्त्रोत के बारे में तीन लाइने लिखने को कहे। उन्हें अपनी खोजी गई जानकारी एवं उसके स्त्रोत को कक्षा में प्रस्तुत करने के लिए कहें।

2. **एटलस** : अपनी कक्षा के हिसाब से पुनः बच्चों को चार–चार के समूहों में बाँट दें। हर समूह को एक एटलस दें। फिर उन्हें एक ऐसी जगह चुनने के लिए कहें जिसके बारे में उन्होंने सुना है और जहाँ वे जाना चाहते है। फिर उन्हें विषयसूची देखना, पृष्ठ संख्या ढूंढना और उसके अनुसार कैसे चला जाए बताया जा सकता है। फिर मज़े की शुरूआत होगी जब वे एक उँगली अक्षांश रेखा पर और दूसरी उँगली देशान्तर रेखा पर रखें और उसका पीछा करते हुए उनके मेल बिन्दु तक पहुँचे और वह जगह ढूँढ पाएं। फिर उनकी खुशी की कल्पना कीजिए। इसके बाद वे उस जगह के बारे में एक और जानकारी जुटाएँ। इस स्थान को नक्शे और ग्लोब पर ढूँढ़ने में उनकी मदद कीजिए उनसे पूछिए की उन्हें कोई अन्तर दिख रहा है क्या?

3. **शब्दकोष** : यह उत्तम होगा कि हर बच्चे के पास एक छोटा शब्दकोष हो । पुस्तकालय शिक्षक एक शब्द बोले और बच्चों से उसका अर्थ, उच्चारण ढूँढ़ने और उसका प्रयोग करते हुए एक वाक्य सोचने को कहे जो पूछने पर वे बता सकें। अगर आपकी कक्षा में अलग–अलग स्तर के बच्चे हैं तो हर स्तर के लिए अलग शब्द दें।

मैंने इन खेलों का वर्णन इन तीन मूल स्त्रोतों के लिए किया है पर अन्य स्त्रोतों के लिए भी ऐसे खेल खेले जा सकते हैं। कक्षा 10 या उससे ऊपर के बच्चों को अपने सवाल लिखने को कहा गया एक बच्चे ने लिखा हम मरते क्यों है यह एक गम्भीर प्रश्न है। जिसका विस्तार जीवविज्ञान, दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान तीनों में है। अन्त में हमें सहमत होना पड़ा कि हमारे पास कोई अन्तिम जवाब नहीं है।

एक अन्य बात कि इस तरह की गतिविधियाँ या खेल साल में कम से कम एक या दो बार होने ही चाहिए जब तक कि बच्चे प्रोजेक्ट कार्य अच्छे से ना करने लगे। थोड़े बड़े बच्चों के लिए पढ़कर प्रासंगिक जानकारी जुटाना एक अतिरिक्त कौशल होगा। ये सब अभ्यास समय–समय पर प्रोजेक्ट कार्य के लिए किताबों एवं इन्टरनेट से जानकारी ढूँढ़ने, सूचना की निष्पक्षता को परखने, समकालीनता एवं वास्तविकता का ध्यान रखने, नोट्स लेने एवं नोट्स के आधार पर प्रभावी लेखन के माध्यम से किए जा सकते हैं। हालांकि ये अंग्रेजी शिक्षक द्वारा बहुत अच्छे से करवायी जा सकती है और पुस्तकालय शिक्षक इस कौशल निर्माण में मददगार हो सकता है।

## पुस्तकालय द्वारा परियोजनाओं की शुरूआत

परियोजनाएं विषय से परिचित होने और जुड़ने का एक आसान एवं मजेदार तरीका है। हर साल कम से कम एक बार ऐसी गतिविधि होनी चाहिए जब बच्चे छोटे समूहों में जोड़ों में या फिर अकेले परियोजनाओं पर काम करें। परियोजना की प्रत्येक थीम पुस्तकालय के उपयोग में आसानी एवं बढ़ोतरी लाने के लिए है।

अक्सर, हम कक्षा के साथ विचार–मंथन से शुरूआत करते हैं। पुस्तकालय के उनके अपने काम की प्रक्रिया से कुछ विचार उभरते हैं या हम उनके काम का अवलोकन करके कुछ सामान्य बातें निकाल सकते हैं। फेसीलिटेटर भी वे चीजें सुझा सकता है जो उसे लगती हैं कि बच्चों के पुस्तकालय से जुड़ने में बाधक है।

अगला चरण है एक योजना बनाना जिसमें बच्चों के सुझाव और फेसिलिटेटर का निर्देशन शामिल हो। इस पर बात करना ठीक होगा कि उन्हें किस तरह की सामग्री एवं मदद की जरूरत है। यही सही समय है जब फैसिलीटेटर थीम के आधार पर आर्ट एण्ड क्राफ्ट और भाषा शिक्षक से सहायता के लिए बात करें। मैंने देखा है कि शिक्षक अपनी दिनचर्या में इस तरह के कामों का स्वागत करते हैं और उसके लिए तैयार रहते हैं।

परियोजना की समय सीमा तय करना प्रक्रिया को सुगम बनाता है। यह बच्चों को देखने में मदद करता है कि नियमित एवं नियोजित कार्य समय पर पूरा हो सकता है।

जब परियोजना पूरी हो जाए तो इसे प्रार्थना सभा में पूरे स्कूल के सामने प्रस्तुत किया जाए। इसके द्वारा प्रस्तुतीकरण में आत्मविश्वास एवं बड़े स्तर के लिए मौकों को सुनिश्चित किया जा सकता है। फिर इसे पुस्तकालय में एक सप्ताह तक प्रदर्शन के लिए रखा जा सकता है और फिर इसका यथोचित उपयोग किया जा सकता है।

यहाँ परियोजनाओं के कुछ उदाहरण जिन्हें पुस्तकालय में करवाया गया–

1. थीम आधारित किताबें बनाना ''जैसे ––––– जिन्दगी का एक दिन स्कूल में काम करने वाले कर्मचारी की आत्मकथा, प्रसिद्ध कहानियों के संक्षिप्त रूप, पुस्तकालय का इतिहास, अंग्रेजी से हिन्दी या कन्नड़ में अनुवाद और यात्रा विवरण'' ये परियोजनाएं प्रकाशित पुस्तकों की तर्ज़ पर बनी हैं जो बच्चों के लिए सीखने का बहुत बढ़िया अनुभव साबित हुई।
2. पोस्टर, जो पढ़ने को प्रोत्साहित करे या उपयोगकर्ताओं के लिए कुछ सामान्य नियम बताते हों।
3. विभिन्न श्रेणियों के अन्तर्गत किताबों की ग्रंथ सूची बनाना। जैसे अतीत की कहानियां, विदेशी कहानियां, जानवरों की कहानियां, मिथक (कल्पना) और जादू आदि अन्य। ये बहुत ही आकर्षक तरीके से बनी हों और जब बच्चे किताब लेने आएंगे तो उन्हें काफी मददगार होगी। यह दूसरा

तरीका है जिससे फेसीलिटेटर अपना कार्यभार कम कर सकें और अन्य गतिविधियों में शामिल हो सकें।

4. बच्चों के पढ़ने के पैटर्न एवं प्राथमिकताओं का आकलन करने के लिए प्रश्नावली (आंकड़ों सहित)।

5. कहानी की किताबों के चित्र बनाना जिसमें पढ़ने वाला अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए किसी चरित्र या दृश्य को दर्शाए।

7. रंगीन और आकर्षक तरीके से किताबों की रेक्स/अलमारियों को निर्देशित करने वाले लेबल बनाना।

8. मिट्टी और कीड़ों से किताबों का बचाव करना– इसमें किताब का कवर बनाना, उसके अन्दर किताब और लेखक के बारे में लिखना और पिछले कवर के अन्दर की तरफ किताब का रिव्यू और स्कूल के पाठकों द्वारा टिप्पणियां लिखना शामिल है।

9. पुरानी किताबों को संभालना, प्यार करना और आकर्षक तरीके से उनकी मरम्मत कर इसे प्रदर्शित करना ताकि अन्य लोग भी ऐसी चीजें करने के लिए प्रोत्साहित हों।

10. खुले पुस्तकालय पर एक छोटी फिल्म बनाना। इस प्रक्रिया में बच्चों द्वारा आसाइन्मेंट लिखकर पुस्तकालय के प्रति अपना नजरिया बनाएं और उन चीजों की सूची बनाएं जो वे देखना चाहते हैं और फिर स्क्रिप्ट लिखी जाए। फिल्म की शूटिंग फेसीलीटेटर या अन्य किसी शिक्षक द्वारा या किसी पूर्व छात्र द्वारा की जा सकती है।

11. पुस्तकालय के बाहर किसी स्थान पर बैठकर पढ़ने के लिए जगह बनाई जाए।

12. स्कूल में जर्नल्स के आलेखों की सूची बनाई जाए। यह काम फेसिलीटेटर के निर्देशन में बच्चों द्वारा किया जा सकता है।

13. अपने पसंदीदा लेखक या चित्रकार को पत्र लिखना। यह गतिविधि किसी जीवित या मृत दोनों प्रकार के लेखकों या चित्रकारों के लिए की जा सकती है। इससे पाठक और लेखक या चित्रकार के बीच एक जुड़ाव बनेगा और उसकी अभिव्यक्ति होगी।

14. किसी एक विषय की सारी किताबों को देखें, उनकी मरम्मत, लेबल लगाना और कांट–छांट (खराब हिस्से की) करना। इसका बच्चों को बहुत फायदा होता है क्योंकि उन्हें किसी एक विषय की झलक मिलती है।

15. प्रत्येक बच्चे से अपनी पसंद की छः किताबें चुनने और उनका रिव्यू लिखकर किताब के अन्दर चिपकाने को कहें।

यहां कुछ तरीके हैं जिन्हें हमने आज़माया है। कुछ और भी तरीके आप अपने पुस्तकालय में आज़मा सकते हैं। इस तरह की परियोजनाओं के दोहरे फायदे हैं। एक तो छात्र पुस्तकालय से जुड़े पहलूओं को नजदीक से देख पाते हैं और सक्रिय रूप से पुस्तकालय को अधिक सहज बनाने के बारे में सोच पाते हैं। दूसरा उनके द्वारा ली गई परियोजनाएं सीधे दूसरे बच्चों और शिक्षकों द्वारा काम में भी ली जाती हैं।

## अन्य शिक्षक स्टाफ के समान ही पुस्तकालयाध्यक्ष कैसे बनें?

1. आपके पास हर कक्षा एक लाइब्रेरी कालांश में होगी, अगर नहीं है तो इसके लिए प्रयास करें। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका कालांश किसी अन्य कक्षा का विस्तार मात्र न बनें और न ही उसका उपयोग गृहकार्य पूरा करने के लिए किया जाए।
2. अगर आप पहले से चयन कमेटी का हिस्सा नहीं है तो अपने प्रबंधक से इसके लिए बात करें और तभी आप बजट और क्रय के लिए अपने अमूल्य सुझाव दे पाएंगे। यह आपकी विशेषता का क्षेत्र होगा।
3. स्टाफ मीटिंग में भाग लें। पुस्तकालय में बच्चों के काम से अवलोकन साझा करें। यह चर्चा शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगी
4. शिक्षा, शिक्षा दर्शन एवं अभ्यास की कुछ पुस्तकें पढ़ना आपको ऐसी मज़बूत बुनियाद देगा जो पुस्तकालय का आधार होगी।
5. अन्य शिक्षकों की ही तरह आप भी अपने कार्य की रिपोर्ट लिखते हैं, अगर नहीं तो अभी से शुरू करें।
8. कुछ पुस्तकालय विशेषज्ञों के व्याख्यान सुनने की कोशिश करें ताकि आप वर्तमान पुस्तकालय आंदोलनों एवं अभ्यासों के बारे में जान सकें। चाहे आप उनका उपयोग अपने पुस्तकालय में न करें पर इससे आप जान पाएंगे कि पुस्तकालय की दुनिया में क्या हो रहा है।
6. अपने पुस्तकालय में बच्चों के अवलोकन के आधार पर हर स्तर के बच्चों के लिए एक पुस्तकालय पाठ्यक्रम तैयार करें
7. बच्चों में जो क्षमताएँ, रुचियाँ और उत्साह देखें उसे नोट करें।
9. इस तरह के और अन्य सेमिनार एवं कार्यशालाओं में भाग लेना ताकि विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष की व्यापक भूमिका, जिसमें काफी संभावनाएँ छिपी हैं, को देख पाएँ।
10. अगर आपके स्कूल में प्रार्थना सभा होती है तो एक सप्ताह पठन सप्ताह के रूप में मनाने को कहिए जिसमें शिक्षक पुस्तकालय से अपने पसंद का टेक्स्ट/पाठ पढ़कर सुनाए। इस तरह से पुस्तकालय के विभिन्न पहलू प्रकट होंगे।
11. बच्चों को भी विभिन्न विषयों एवं थीम्स (काल्पनिक व अकाल्पनिक) की संदर्भ सूची बनाने के लिए तैयार करें व खुद भी तैयार रहें।
12. अगर आपके स्कूल में SUPW या अन्य कोई वैकल्पिक विषय है तो उसमें पुस्तकालय के लिए एक छोटा कोर्स प्रस्तावित कीजिए और बच्चों को बताइए कि किताबें व्यवस्थित कैसे करते हैं। ISBN नम्बर क्या है आदि। पुस्तकालय कार्य में बच्चों से मदद लीजिए।
13. कोशिश कीजिए कि आप पुस्तकालय में फिल्म दर्शन एवं प्रशंसा समूह शुरु करें। यह सीधे किताब से जुड़ा हो सकता है। किताब के फायदों के बारे में चर्चा द्वारा इसे आगे बढ़ाया जा सकता है या फिर उन्हें इससे उलट भी किया जा सकता है।
14. एक पूरे साल के लिए विषय विशेष अध्यापक के साथ इतिहास, भूगोल साहित्य में परियोजना कीजिए।

सबसे अन्त में और सबसे महत्वपूर्ण है कि अगर आपके पास कम्प्यूटर पर काम करने की क्षमता नहीं है तो इसे जल्दी से हासिल कीजिए। यह आपको अपने पाठकों के लिए इन्टरनेट से सूचनाएँ एकत्र करने और अपनी सामग्री को कम्प्यूटरीकृत करने में मदद करेगा। यह जरूरी है।

## शिक्षक एवं पुस्तकालय : एक सहजीवी रिश्ता

पुस्तकालय अपने संकलन, संसाधन एवं सेवओं के साथ एक जिम्मेदार इकाई है, जो मात्र अपने जादुई स्पर्श से पाठक के जीवन में नई–नई ऊर्जा संचरित कर सकता है। एक स्कूली पुस्तकालय में मुख्य पाठक शिक्षक ही होते हैं क्योंकि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनके द्वारा ही छात्रों के जीवन में पुस्तकालय से जुड़ने की शुरुआत होती है।

स्कूली पुस्तकालय का क्रियाशील, जीवन्त एवं निरन्तर विकसित होना क्यों जरूरी है?

.– यही वो जगह है जहाँ बाल मन अपनी जिज्ञासा एवं ज्ञान की प्यास को शांत कर पाता है।

– यही वो जगह है जहाँ शिक्षकों में खोज–पड़ताल की भावना मिलती है, जो स्थायी और सुदृढ़ होती जाती है।

– यही वह जगह है जहाँ फेसिलिटेटर का सामना पुस्तकालय को जीवंत सक्रिय बनाने की चुनौती से होता है।

– आखिर में, यही वह जगह है जहाँ संस्था प्रधान शिक्षण प्रक्रिया के मूल को पहचानते और महसूस करते हैं।

इन सभी तत्वों के बीच का रिश्ता इनमें अन्तनिर्भरता भी पैदा करता है जहाँ कोई भी पहलू बिना दूसरे के जोश एवं स्थायित्व के साथ विकसित नहीं हो सकता। यहाँ, मेरा फोकस शिक्षकों पर है पर जैसा कि आप देखेंगे कि संस्थाप्रधान और पुस्तकालय फेसिलिटेटर के निहितार्थ भी इसमें सम्मिलित हैं।

वो करना जिसमें हमें विश्वास हो, जिससे हमें खुशी मिलती हो, जीवन में अर्थ भरने का एक प्राकृतिक तरीका है। इस तरह की परिस्थितियों में हम लगातार सीखते और नया करते रहते हैं। वहाँ एकरूपता और थकान के लिए कोई जगह नहीं होती। सीखना सिखाने के लिए अनिवार्य है। यह एक उक्ति है, मैं इस पर बहुत ज़ोर नहीं देती। यहाँ जॉन डूवी का कार्य एवं प्रतिक्रिया की ताकतों को जोड़ने वाला अवलोकन प्रासंगिक है।

शिक्षक के रूप में आपको चिन्तनशील सीखने के उद्देश्य को समझना और विद्यालयों को इस बारे में समझाने की जरूरत है। हमारे आस–पास परिवर्तित होती परिस्थितियाँ, विकसित स्थितियाँ, तकनीकी एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन शिक्षक होने के नाते हमसे समझदार प्रतिक्रिया की मांग करते हैं। नित–नये मुद्दों से निपटना भी जरूरी है जो शायद कल अप्रचलित हो सकते हैं। नई तकनीकों का उपयोग एवं उपलब्धि भी अकादमिक सीखने की प्रकृति को प्रभावित करती है।

एक शिक्षक एवं प्रशिक्षक के रूप में क्या आप अपने आप को पाठ की शुरुआत में बातचीत करते हुए देख सकते हैं, ताकि एक रुचिकर एवं समृद्ध संवाद किया जा सके और यहाँ तक कि स्पष्ट रूप से कुछ बताने के लिए भी आपके पास संदर्भ होने चाहिए ताकि आप उनके आधार पर कुछ बता पाएँ। किसी भी सन्दर्भ की बार–बार प्रतिपूर्ति किए बिना उसके आधार पर कोई बात कहना असंभव है। इसलिए..... पुस्तकालय में घुसिए.....

स्कूली पुस्तकालय या अन्य पुस्तकालय ताकि आप अपनी क्षमताओं और ज्ञान के भंडार को नया एवं ताजा कर पाएं।

शिक्षक प्रशिक्षक अपने अनुभव से जानते हैं कि किसी भी क्षेत्र को ठीक से पढ़ाने के लिए जरूरी है कि उस अधिगम क्षेत्र की समझ हो, लेकिन यह समझ अपने आप में काफी नहीं है तो फिर क्या जरूरी है? पहला अपने विषय की खास विषयवस्तु की गहरी समझ, दूसरा परिपेक्ष्य का विस्तार। स्थानीय एवं वैश्विक दोनों स्तरों पर कड़ियाँ व जोड़ बनाए जाते हैं। यह व्यक्ति, विद्यार्थी एवं संस्था को कैसे मदद करेगा। व्यक्ति के लिए– व्यक्तिगत विकास की जबरदस्त क्षमता है। मौजूदा रुचियाँ मज़बूत होती हैं, नये प्रश्न उभरते हैं और आत्मविश्वास की प्रक्रिया अपनी राह पर आगे बढ़ती हैं। यह मात्र उपस्थिति नहीं बल्कि इसमें आत्मविश्वास भी ष्षामिल है। यहाँ किसी मनोवैज्ञानिक की जरूरत नहीं है जो यह बताए कि आपमें सामान्य ज्ञान और सामंजस्य का क्या स्तर हैं।

संस्था के लिए एक नवाचार है, आत्मविश्वासी और क्रियाशील शिक्षक किसी भी संस्था की अमूल्य संपदा है। वह उस संस्था के लिए एक दृढ़ वक्ता होने के साथ ही साथ अपने तरीके का एक व्यक्तित्व है। वास्तव में एक बेहतर शिक्षक वहीं है जो अपनी आत्मा की सुनता है।

विद्यार्थियों के लिए एक शिक्षक जो अपने विषय और उससे इतर एक अच्छा पाठक है, जो बच्चों के समक्ष एक मॉडल प्रस्तुत करता है तथा प्रोत्साहन का स्रोत है। एक शिक्षक जिसके पास पढ़ने, संदर्भ एवं शोध का मजबूत आधार है वह अधिकार और सुरक्षा का भी हकदार है। हमारे स्कूल का एक छोटा बच्चा इस तथ्य पर अड़ा था कि अल्बर्ट आइंसटाइन के शिक्षक ने उन्हें हाई स्कूल में तब सजा दी जब वे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाए। पढ़ने, खोजने एवं संदर्भ ढूढ़ने की प्राथमिक भूमिका शिक्षक द्वारा निभाई जाती है पर जब धीरे–धीरे बच्चे पुस्तकालय का उपयोग करने लगते है तो बड़े पैमाने पर वे स्वयं ही प्राथमिक भूमिका निभाने लगते है और शिक्षक की ओर केवल समर्थन और पुष्टि (confirmation) के लिए ही रूख करते है। वे आत्म–तृप्ति हेतु तेयार होते हैं हालांकि शिक्षक प्रोत्साहन एवं निर्देशन में जुटे रहता हैं।

लेकिन मुझे आपसे कुछ सवाल पूछने चाहिए क्या आप यह मानते हैं कि पुस्तकालय में बिताया गया वक्त, वक्त का सही इस्तेमाल  है? क्या आज पुस्तकालय के प्रति सकारात्मक नज़रिया रखते हैं? अगर जवाब हां है, तो मैं आत्मविकास से संबंधित क्षेत्रों की एक ओर सूची की बात करती हूं जो पुस्तकालय के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

– समझने के लिए पढ़ना कि जो आप पढ़ा रही हैं, वह संपूर्ण पाठ्यचर्या में कैसे फिट होता है। अगर एक शिक्षक के रूप में आप पाठ्यचर्या बैठकों में शामिल रहे हैं तो आपको यह स्पष्ट होना जरूरी है कि मुद्दे क्या हैं?

– अपने शिक्षण एवं संवाद के तरीकों को बेहतर बनाने के लिए कक्षा व्यवस्था, वर्तमान नजरिया और नवाचारी तकनीकें के बारे में पढ़ना।

– किसी खास बच्चे की शारीरिक या मानसिक समस्याओं को पहचानने एंव समझने के लिए पढ़ना। शिक्षण एवं संरक्षण (praenting) दोनों ही बहुत ही महत्वपूर्ण (demanding) एवं सक्रिय जिम्मेदारियां हैं।

हांलांकि एक शिक्षक इन सभी पृष्ठभूमियों से जुड़ा होता है लेकिन फिर भी मुझे विश्वास है कि आप अपडेट रहने की जरूरत को समझ पाएंगे।

आप कैसे इसको आत्मसात करके (actulise) शुरूआत करते हैं–

1. सबसे पहला कदम है कि खुद को जब भी मौका मिले पुस्तकालय के संग्रह में शामिल विभिन्न पहलूओं को देखने के लिए उन्मुख कीजिए। मैं हमेशा पुस्तकालय कर्मियों से कहती हूं कि स्कूली सत्र की शुरूआत में पुस्तकालय से परिचित एवं अभ्यस्त होने का प्रयासकरें, लेकिन अगर किसी कारण से यह ना हो सके तो खुद पहल करें। आगे आपको पुस्तकालय कर्मियों को लगातार दोस्ताना चुनौतियां देते रहना पड़ेगा। सामग्री तक पहुंच, उपलब्धता, खोजने एवं ढुंढ़ने की सहजता, खंगालने के लिए समय, संग्रह और व्यवस्था के लिए सुझाव, सन्दर्भ के लिए प्रश्न करो.... और आगे बढ़ो। विशेष रूचि वाले क्षेत्रों को जानने के लिए विद्यार्थियों से बात करें, हाइलाइट करें और प्रासंगिक सामग्री उपलब्ध करवाएं।

2. शिक्षण के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग–विषय से संबंधित सामग्री दिखाने के लिए विद्यार्थियों को पुस्तकालय में ले जाएं जैसे विडियो, सीडी रोम, फिल्में, नक्शे, ऑडियो टेप्स पुराने आंकड़े...

3. प्राथमिक शिक्षण प्रोजेक्ट के लिए कविता/कहानी चुने और कक्षा को उसकी स्क्रीप्ट लिखने और नाटक खेलने को कहें किताबों का प्रयोग कला, विज्ञान के प्रयोगों, मिट्टी के काम और गणितीय पहेलियों के लिए करें ताकि व्यक्तिगत प्रक्रियाओं को जगा सकें एवं जान सकें। किसी मेले या उत्सव के लिए पुस्तकालय से मोटिफ्स (आकृतियां) बनाने और सजाने का आइडिया लें। कला कार्य... संभावनाएं अपार है।

4. पुरानी कक्षाओं के लिए मैंने शिक्षकों को बुलाया और उनके द्वारा हाल ही में पढ़ी गई पुस्तकों के बारे में चर्चा के लिए कहा। विद्यार्थियों को आभास हुआ कि उनके शिक्षक विषय से बाहर भी भिन्न व्यक्तित्व है।

   शिक्षकों के लिए भी यह एक अवसर था जब वे विद्यार्थियों से अलग तरह से जुड़ सके। एक विचार जो पुस्तक चर्चा के लिए मेरे पास था कि विशेष पाठ से संबंधित चर्चा करवायी जाए। उदाहरण के लिए एक गणित या जीवविज्ञान शिक्षक बच्चों के लिए रूचिकर कुछ किताबों के नाम सुझा सकता है जिन्हें पढ़ कर पुस्तक चर्चा में प्रस्तुत किया जा सके। यह किसी सामान्य पुस्तक चर्चा से बहुत फरक होगा जहां एक बड़े समूह की उपस्थिति होगी। यहां शिक्षक पुस्तक पर आधारित चर्चा की संभावनाएं भी तलाश सकता है।

5. शिक्षकों द्वारा सुनाई गई पुस्तकें (फिक्शन एवं नॉन फिक्शन) पुस्तकालय में प्रदर्शित की जा सकती है या उनकी सूची पुस्तकालय बोर्ड पर चस्पा की जा सकती है। शिक्षकों, यहां तक कि आप विद्यार्थियों एवं अपने सहकर्मियों का ध्यान आपके द्वारा किसी पत्रिका में पढ़े गए रूचिकर आलेख की ओर दिला सकते हैं।

6. सामान्यतया अलग–अलग कक्षाओं द्वारा किए गए प्रोजेक्ट पुस्तकालय में प्रदर्शित किए जाते हैं। अगर आप शिक्षक के रूप में नियमित पुस्तकालय में जाते रहे तो आपको कुछ नए विचार आएंगे। साथ ही अगर आप एक दूसरे क्षेत्र में बच्चों के प्रयासों को देखेंगे जो आपको बच्चों को एक अलग नज़रिये से देखने में मदद करेगा।

7. अगर आपके पास कोई यात्रा वृतान्त डायरी (artifacts) हैं तो आपने एक यात्रा से बनाई है तो अगर संभव हो तो उसे पुस्तकालय में प्रदर्शित करें, उसके बारे में बात करें। अगर आपकी यादें या पुरातात्विक रुचि की पुरानी स्क्रेप बुक है तो उसे भी कुछ समय के लिए डिसप्ले में रखें।

8. समकालीन घटनाक्रम पर एक युनिट करने के लिए समाचार पत्र और जर्नल का उपयोग करें– आतंकवाद, इराक युद्ध, भारत–पाकिस्तान संबंध, लिंग भेद..... ये सूची ओर भी बढ़ाई जा सकती है, पर चर्चा एवं वाद–विवाद करें। अगर आप पुस्तकालयकर्मी को सजगे करते रहें तो वह हर तरह के विषयों के लिए प्रासंगिक सामग्री ढूंढ़ने हेतु जागरूक रहेगा।

9. मैं पहले जहां काम करती थी वहां भी और हमारे स्कूल में भी हमेशा शिक्षक किताबें खरीदने एवं पुस्तक मेलों में जाया करते थे इस तरह किताबें पढ़ने वालों और चुनने वालों में सीधा रिश्ता है। शिक्षकों को भी अपने विशिष्ट विषयों से जुड़ी किताबें चुननी और छांटनी होती है। यह पुस्तकालयकर्मी को बहुत बड़ी मदद है जो हर विषय का विशेषज्ञ नहीं होता।

10. बाहर के विजिट सुझाइए– बाहर से विजिटर्स बुलाइए– जो आपके कोई जानकार या संबधी हो सकते हैं। यह सब एक समृद्ध पुस्तकालय के लिए जो आपको भी समृद्ध करेगा।

11. शिक्षकों द्वारा लिखा गया कोई आलेख या किसी सेमिनार या कार्यशाला की सहभागिता को पुस्तकालय बोर्ड पर साझा करना ही होगा। कुछ शिक्षक अपने अनुभवों और प्रयासों के बारे में लिखते हैं जो कि पुस्तकालय में बहुत महत्व रखता है। जब स्कूल भ्रमण हो तो विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही डायरी लिखें। इसे भी पुस्तकालय मे जगह देनी होगी ताकि भविष्य में आने वाले विजिटर्स के लिए विवरण उपलब्ध रहे।

12. पुस्तकालय की साज सज्जा एवं माहौल के बारे में पुस्तकालयकर्मी द्वारा सुझावों का स्वागत हो जो कि शिक्षकों की स्वभाविक रूचि और जुड़ाव से निकलकर आते है।

13. शिक्षक याद रखें अपने विद्यार्थियों को संदर्भ सत्र के लिए पुस्तकालय में ले जाए। यह एक अवसर है। जहां आप अपने और और बच्चों के काम और ज्ञान को तरोताजा कर सकते है।

आप आप पूछेंगे ये सब मैं कैसे करती हूं? समय कहाँ है? प्रति सप्ताह यहां व्यवस्था की बात आती है हर शिक्षक की समय सारणी में प्रति सप्ताह एक कालांश निजी पुस्तकालय कालांश के रूप में होना

चाहिए– इसे बच्चों को संदर्भ के लिए पुस्तकालय ले जाने वाले कालांश से ना जोडे। मेरा विश्वास रखिए ये असंभव नहीं है। एक बारी के बाद आप अपनी रूचि की सामगी ढूंढ़ने के लिए खाली समय और आजादी इंतजार करेंगे। व्यवस्थापकों को जरूर से समझना कि यह दीर्धावधि निवेश है, इसे प्रोत्साहित करना पड़ेगा।

पुस्तकालयकर्मी के रूप में यह उन वाक्यों की एक सूची है जो शिक्षकों एवं प्रधान शिक्षकों को नहीं करने है।

– किसी असफलता के दण्डस्वरूप बच्चों को पुस्तकालय में ना भेजें।

– गृहकार्य पूरा करने के लिए पुस्तकालय में ना भेजें। ये दोनों कार्य पुस्तकालय की गलत छवि पेश करते है।

– पुस्तकालयकर्मी का उपयोग क्लर्क या सामान्य टट्टू के रूप में ना करें।

– पुस्तकालय में संग्रह का इस्तेमाल मेहमानों को प्रभावित करने के लिए ना करें। अगर पुस्तकालय जिसके लिए बनाया गया है उस उद्देश्य की पूर्ति करता है तो इसे किताबों के बनिस्पत पाठकों से ज्यादा भरा हुआ होना चाहिए।

अब तक मैंने पुस्तकालयकर्मी को कोई खास विचार या सुझाव नहीं दिया है लेकिन मुझे विश्वास है कि जैसे आप सुन रहे है तो आप अपने कार्यक्षेत्र का इस नेटवर्क के साथ संबंध जोड़ रहे है। पुस्तकालय में उपयोग कर्ताओं की तीन श्रेणियां है जो हमें पुस्तकालयकर्मी बनाती है। वे कौन हैं? वे विद्यार्थी, शिक्षक एवं व्यवस्थापक हैं। हमें इन तीनों के साथ भरोसा, कुशलता, निर्भरता एवं दोस्ताना रिश्ता बनाने की जरूरत है।

विद्यार्थियों को जीतना सबसे आसान है। वे छोटे, खुले दिमाग वाले और जिज्ञासु होते है। उन्हें स्पष्ट शब्दों में कहें कि आप उनकी मदद के लिए वहां पर है, उन्हें नवीन तकनीकी एवं संदर्भ उपलब्ध करवाने हेतु मार्गदर्शन दें।

– खुले दिमाग से पुस्तकालय में उनका स्वागत करें ।

– अपनी मदद के लिए उन्हें बुलाएं। पुस्तकों और पुस्तकालय में सुधार के लिए उनके सुझावों को अमल में लाएं।

– उनकी जरूरत की सामग्री उन्हें फोटोकॉपी करके दें। एक सहयोगकर्त्ता की तरह उनकी मदद करें। अगर वे कुछ खास किताबों की मांग करें तो कम से कम एक या दो प्रति मंगवाने के लिए व्यवस्थापकों से बात करें और सुनिश्चित करें कि उनका सही उपयोग हो।

– शिक्षकों के लिए पुस्तकालयकर्मी के रूप में हमें उन्हें विश्वास दिलाना होगा कि पुस्तकालय बहुत कुशलता से काम कर रहा है। आप ये शब्दों के बजाय अपने काम और सेवाओं से दिखा सकते हैं। आप उन्हें पुस्तकालय के नियमित पाठकों और मजबूत सहयोगियों के रूप में बदलने का प्रयास करें। उनकी पुस्तकालय में उपस्थिति इस बात का सबूत है।

– सबसे पहले उन्हें पुस्तकालय के उन्मुखीकरण के लिए बुलाए, केवल एक परिचय विजिट। उन्हें अपने नक्शों के संग्रह और लिखित नाटकों की जानकारी दें। असाधारण किताबों को निकाले और उन्हें दिखाएं। उन्हें संबंधित संस्थानों के न्यूजलेटर एवं पेम्पलेट्स उपलब्ध करवाएं।

– अगर आप शिक्षकों की निजी रूचि को जानते हैं तो उन्हें उससे जुड़ी सामग्री के बारे में बताएं। साल की शुरूआत में शिक्षकों से एक फार्म भरवाएं जिसमें वे अपनी जरूरतों और प्रोजेक्ट शीर्षक से संबंधित योजनाओं के बारे में बताए। फॉर्म से शिक्षण के अलावा उनकी रूचियां भी पूछी जा सकती है, सुझाव मांगे जा सकते है। उनसे वायदा ले कि वे किसी तरह के कामों में सीधा मदद करेंगे जैसे– कोई खास मुद्दा/आयोजन एक पुस्तकालय कर्मी के रूप में आप एक अनोखी स्थिति में है जो शिक्षकों को अलर्ट कर सकें क्यों आपके पास पूरे पुस्तकालय की एक दृष्टि है। इस प्रकार बिना बहुत ज्यादा प्रयासों के शिक्षक अपने शिक्षण को एक बहुआयामी दृष्टिकोण में प्रस्तुत कर काम कर सकते है।

व्यवस्थापकों और प्रधानों के साथ, बहुत मुश्किल है एक सरल, खुला और फ्रेंक रिश्ता रखना। याद रखिये हालांकि उनके प्रोत्साहन एवं सहयोग के बिना शायद आप यहां नहीं होते प्रधानों का भरोसा, विश्वास जीतना बहुत महत्वपूर्ण काम है क्योंकि अगर ऐसा नहीं हुआ तो कई सारी बातें अर्थहीन और बातें मात्र रह जाएगी। वाणी से मुखर रहिये और काम भी कीजिए। अगर आप स्पष्टता, जोश और समर्पण दिखाएंगे तो व्यवस्थापकों को सुनना ही होगा। अंत में शिक्षक और पुस्तकालयकर्मी वो आधार है जिस पर कोई स्कूल की इमारत खड़ी होती है या गिरती है।

अब एक पुस्तकालय कर्मी के रूप में हमारा क्या? हम अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए क्या कर सकते है?

- आत्मविश्वास का वातावरण बनाइए, अधिकार एवं कटुवादिता का नहीं
- अपने संग्रह को जानने के लिए प्रयास करें। मैंने बच्चों को कहते हुए सुना है कि ''आंटी ने लाइब्रेरी की सारी किताबें पढ़ रखी है।'' स्पष्ट रूप से नहीं पढ़ी पर मैंने यह प्रभाव जमाया क्योंकि मुझे सारी किताबों के बारे में कुछ अंदाजा तो है। मैं देखती हूं और याद रखती हूं कि किसने यह किताब पढ़ी और इसके बारे में क्या कहा, ये किसने भेंट की या कहां से लाई गई।. .. मुझे लेखक, चित्रांकनकर्त्ता, प्रकाशक... याद है जो संबंध बनाने के लिए काफी है जब में अगली बार उसके बारे में सुनु।
- मैं जहां भी जाती हूं, आइडिया को देखती हूं और एक शिक्षक या पुस्तकालयकर्मी की तरह उसे ग्रहण करती हूं फिर इसे अपनी कक्षा एवं पुस्तकालय में इस्तेमाल करती हूं।

**पुस्तकालय कर्मी, पाठकों और स्त्रोतों को संभालता है। शिक्षक, बच्चों और विषयों को संभालता है। तो आप शिक्षक और पुस्तकालयकर्मियों से ज्यादा बहुआयामी कोई दूसरी टीम को ढूंढ सकते हैं?**

## पुस्तकालय के उपयोग पर रिपोर्ट

- स्त्रोतों/संदर्भों का उपयोग
- शांति से पढ़ने के लिए स्थान का उपयोग
- उचित एवं जरूरी संदर्भ सामगी का पता लगाने के लिए खोजने की क्षमता
- संदर्भ सामग्री का स्वतंत्र पठन, जानकारी, ढूंढ निकालना और नोट्स लेना।
- सामान्य खोजबीन और पढ़ना।
- सीमा और विविधता के साथ काल्पनिक पाठ चुनना और पढ़ना
- सीमा और क्षेत्र के अनुरूप पत्रिकाओं को पढ़ना
- सामग्री का रखरखाव
- नई सामगी के प्रदर्शन की सजगता और अवलोकन
- जगह के हिसाब से क्रम एवं शांति की समझ
- जगह को साफ सुथरा रखने में जुड़ाव
- पुस्तकालय की मदद के लिए पढ़ना, इस क्षेत्र की क्षमताएं
- पुस्तकालय आने की उत्सुकता और उनका आनन्द लेना
- खुले पुस्तकालय के भाव के प्रति जिम्मेदारी